एचएलएल

समन्वया

अंक - 37, मार्च 2025

- विश्वसनीय और किफायती निवारक स्वास्थ्य रक्षा सेवाएं
- प्रयोगशाला परीक्षणों का पूरा स्पेक्ट्रम (नियमित और विशेषता दोनों)
- 24 X 7 सेवा
- नवीनतम प्रयोगशाला उपकरण और तकनीक
- टेली रेडियोलॉजी सुविधा
- निःशुल्क नैदानिक कार्यक्रमों पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ सुनिश्चित करता है
- प्रमुख हवाई अड्डों पर कोविड़ परीक्षण/स्क्रीनिंग सुविधा

60%
तक की छूट

देखें / www.hindlabs.in

NABL
ACCREDITED LABORATORY

हिंदलैब्स
नैदानिक केन्द्र
एचएलएल की एक पहल, भारत सरकार का उद्यम

विषय-सूची

हिंदी दिवस का संदेश	4
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश	7
संपादकीय	8
नराकास क्षेत्रीय राजभाषा सम्मान	9
एचएलएल के राजभाषा कार्यान्वयन की झलकियाँ	10
एचएलएल की नवाचार परियोजनायें	26
एचएलएल समाचार	31
गणतंत्र दिवस समारोह	36
सृजनशीलता	38
नेमी टिप्पणियाँ	51
एचएलएल शब्दावली	52

अंक 37, मार्च 2025

संपादक मंडल

संरक्षक डॉ.अनिता तंपी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, **मुख्य संपादक** डॉ.रॉय सेबास्टियन वरिष्ठ उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) प्रभारी , **संपादक** डॉ.सुरेष कुमार आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

संपादकीय सहायक आशा एम, शालिनी एस.एस, मीना एम.वी., लीना एल, लक्ष्मी सुदर्शनन

संपादक मंडल हरिकृष्णन नंपूतिरी, उपाध्यक्ष (जीबीडीडी & सीसी) प्रभारी, सुधा एस नायर, उप महा प्रबंधक (कॉर्पोरेट संचार)

डिजाइनिंग श्रीजित.एस.एल, अलन जॉयल (कॉर्पोरेट संचार)

मुद्रक अक्षरा ऑफसेट प्रिंटेर्स, तिरुवनंतपुरम।

संपादित एवं प्रकाशित (केवल मुफ्त परिचालनार्थ) हिंदी विभाग, एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड, निगमित एवं पंजीकृत कार्यालय, पूजप्पुरा, तिरुवनंतपुरम - 695 012, केरल, दूरभाष: 2354949.

वेब: www.lifecarehll.com **फैक्स:** 0471-2358890

समन्वया में प्रकाशित लेखों में निहित विचार लेखकों के अपने हैं, इससे एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड का कोई संबंध नहीं है।

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहरी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024

(अमित शाह)

जगत प्रकाश नड्डा
JAGAT PRAKASH NADDA

मंत्री
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण
व रसायन एवं उर्वरक
भारत सरकार

Minister
Health & Family Welfare
and Chemicals & Fertilizers
Government of India

संदेश

हिन्दी दिवस हम सबके लिए महत्वपूर्ण और गौरवमयी दिन है। यह अवसर न केवल हमारी अपनी भाषा हिन्दी का उत्सव है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर और राष्ट्रीय एकता का भी समारोह है। हिन्दी भाषा हमारे देश के विभिन्न हिस्सों को जोड़ती है और हमें एकता के सूत्र में बांधती है।

हिन्दी का इतिहास सदियों पुराना है और इसने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साहित्य, कला, संगीत, सिनेमा और संचार के विभिन्न माध्यमों में हिन्दी ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। प्रेमचंद, निराला, महादेवी वर्मा जैसे महान साहित्यकारों ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया है और हमें गर्व है कि हम आपस में हिन्दी भाषा में बात करते हैं और एक-दूसरे के विचारों को जानते-समझते हैं।

आज के इस अवसर पर, हमें यह समझना होगा कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं है, बल्कि यह हमारी संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों की भी वाहक है। हमें हिन्दी के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाने की जरूरत है। हमें हिन्दी को न केवल आपसी संवाद का माध्यम बनाना है, बल्कि इसे लिखने और पढ़ने में भी गर्व महसूस करना है।

हमें हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए ताकि यह भाषा हमेशा जीवंत और प्रगामी बनी रहे। आइए, हम सब मिलकर हिन्दी को और अधिक समृद्ध और सशक्त बनाने का संकल्प लें।

हिन्दी दिवस की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द!

जगत प्रकाश नड्डा

कार्यालय: 348, ए-स्कंध, निर्माण भवन, नई दिल्ली–110011 • Office: 348, A-Wing, Nirman Bhawan, New Delhi-110011
Tele.: (O) +91-11-23061661, 23063513 • Telefax: 23062358 • E-mail: min-hfm@gov.in

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के तहत भारत सरकार का उद्यम, ने 5 अप्रैल 1969 को कंडोम विनिर्माण कंपनी के रूप में अपना प्रचालन शुरू किया। तब से, यह एक व्यापक स्वास्थ्यरक्षा वितरण संगठन के रूप में विकसित हुआ है, जो एचआईवी/एड्स की रोकथाम, रोग नियंत्रण, प्रजनन स्वास्थ्यरक्षा आदि सहित विभिन्न राष्ट्रीय स्वास्थ्य पहलों के समर्थन एवं कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। 8000 से अधिक कर्मचारियों के समर्पित कार्यबल के साथ, एचएलएल भारत सरकार के लिए गर्भनिरोधकों के प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में कार्य करता है, जो परिवार नियोजन कार्यक्रम के लिए निरंतर समर्थन सुनिश्चित करता है। इसके विविध विनिर्माण पोर्टफोलियो में पुरुष एवं महिला कंडोम, ब्लड बैग, सर्जिकल स्यूचेर्स, कॉपर-टी, गर्भनिरोधक गोलियाँ, गर्भावस्था परीक्षण किट, आयुर्वेदिक एवं यूनानी दवाएँ, मासिकधर्म स्वच्छता उत्पाद, वेंडिंग मशीन एवं इंसिनरेटर शामिल हैं। स्वास्थ्यरक्षा उत्पादों के एक विश्वसनीय आपूर्तिकर्ता के रूप में अपनी भूमिका से परे, एचएलएल ने स्वास्थ्य क्षेत्र, प्रापण परामर्श, रीटेल फार्मेसियों, नैदानिक सेवाओं आदि के लिए अवसंरचना विकास में विस्तार किया है और भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य वितरण का एक अभिन्न अंग बन गया है।

जन कल्याण के लिए प्रतिबद्ध एक स्वास्थ्यरक्षा कंपनी के रूप में, एचएलएल न केवल आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करती है, बल्कि नवाचार हिंदी गतिविधियों को आयोजित करके, भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को भी सक्रिय रूप से बढ़ावा देती है। वर्ष 2024-25 के दौरान कंपनी ने वैविद्यपूर्ण हिंदी कार्यक्रम सफल तरीके से आयोजित किया, जिनमें उल्लेखनीय हैं - राजभाषा नीति पर पुनश्चर्या कार्यक्रम, अखिल भारतीय कंठस्थ प्रशिक्षण, नव नियुक्त कर्मचारियों के लिए राजभाषा नीति पर परिचय कार्यक्रम, टिप्पण व आलेखन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण, स्मृति परीक्षा, हिंदी प्रतियोगिताएँ, हिंदी पखवाड़ा समारोह, हिंदी मेला एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, कॉलेज छात्रों के लिए राज्य स्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण, अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस एवं भारतीय भाषा कवि सम्मेलन।

इन पहलों के अलावा, हम राजभाषा पत्रिका 'समन्वया' भी प्रकाशित करते हैं, जिससे पाठकों को कंपनी की परियोजनाओं और वर्ष भर में आयोजित हिंदी कार्यक्रमों का विवरण भी मिलता है। मुझे इस पत्रिका का सैंतीसवाँ अंक प्रस्तुत करने में खुशी है और मैं हरेक पाठक से अपनी प्रतिक्रिया साझा करने के लिए प्रोत्साहित करती हूँ ताकि हम आगामी वर्षों में इसे और अधिक ज्ञानवर्धक एवं रोचक बना सकें।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

अनिता तम्पी

डॉ.अनिता तंपी
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादकीय

'हमारी चिंतायें हमारे कार्यों को प्रभावित करती हैं, अतः जो व्यक्ति मौकाओं को पहचानकर ठीक समय पर उसका सदुपयोग करता है, जीवन में उसकी जीत होगी।'

हिंदी सभ्यता, संवेदना एवं दिल की भाषा होने के साथ - साथ अब रोजगार की भाषा भी बन गयी है। जिससे भूमंडलीकरण के इस दौर में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी भाषा ने व्यापक स्थान अपनाया है। यह मात्र नहीं, भारत जैसे बहुभाषीय देश में आम जनता की संप्रेषण संबंधी ज़रूरतों के लिए हिंदी जैसी जनमान्य भाषा की अनिवार्यता है। साथ ही, संघ सरकार की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी भाषा के प्रचार - प्रसार एवं प्रोन्नमन करना हरेक केंद्र सरकारी कार्यालयों का उत्तरदायित्व समझकर, कंपनी के राजभाषा कार्यान्वयन एवं राजभाषा नीति के अनुपालन में ध्यान देते हुए, वैविद्यपूर्ण एवं नवाचार हिंदी कार्यक्रम लगातार आयोजित करने में हम सदा प्रतिबद्ध हैं।

आज के तकनॉलजी के युग में, इस समय की माँग के अनुसार, हम सोशल मीडिया यानी कंप्यूटर, मोबाइल के ज़रिए हिंदी में काम करने के तरीकाओं से परिचित कराने की ओर हिंदी डिजिटल तकनॉलजी पर आधारित कंठस्थ प्रशिक्षण, तकनीकी सेमिनार आदि केरल राज्य एवं दक्षिण क्षेत्र के हिंदी से जुडे कर्मचारियों के लिए बीच - बीच में आयोजित कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, राजभाषा हिंदी से संबद्ध संगत जानकारी तथा अपना शासकीय काम हिंदी में करने की आवश्यकता के बारे में कंपनी के कर्मचारियों को अवगत कराने के उद्देश्य से हम हिंदी कार्यशाला एवं विविध कार्यक्रम प्रत्येक महीने में आयोजित करते हैं।

इस क्रम में, हमने, विद्यमान वर्ष में आयोजित संघ नेताओं के लिए बोलचाल हिंदी क्लास, हिंदी फोरम बैठक, हिंदी स्मरण परीक्षा, कर्मचारियों एवं उनके बच्चों के लिए हिंदी प्रतियोगितायें, हिंदी मेला एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, कॉलेज विद्यार्थियों के लिए राज्य स्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि हिंदी गतिविधियों में प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी हुई। इन सभी कार्यकलापों का विवरण हम कंपनी की राजभाषा पत्रिका 'समन्वया' में संकलित करने की पूरी कोशिश करते हैं।

मैं, एचएलएल की गृह राजभाषा पत्रिका 'समन्वया' के सैंतीसवाँ अंक (ई - पत्रिका) आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहता हूँ। पाठकों से मेरी कामना है कि पत्रिका के आगामी अंक को ज्ञानवर्द्धक बनाने के लिए अपना बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत करा दें।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

डॉ.रॉय सेबास्टियन
वरिष्ठ उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) प्रभारी

नराकास (उपक्रम) को क्षेत्रीय राजभाषा सम्मान

तिरुवनंतपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) का श्रीगणेश वर्ष 2015 को हुआ। नवीनतम एवं नवाचार हिंदी कार्यकलाप आयोजित करने के फलस्वरूप टोलिक (उपक्रम) को हर साल केंद्र गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दक्षिण - पश्चिम क्षेत्र के केंद्र सरकार, उपक्रम एवं बैंक के नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की राजभाषा हिंदी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए संस्थापित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मान मिल रहा है। यहाँ उल्लेखनीय बात यह है कि वर्ष 2023 - 2024 के क्षेत्रीय नराकास राजभाषा सम्मान (प्रथम स्थान) के लिए टोलिक (उपक्रम) को विनिर्णीत किया गया है। 04.01.2025 को कर्नाटक मुक्त विश्वविद्यालय, कोनवेकेशन हॉल, मैसूर में आयोजित दक्षिण - पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में आदरणीय केंद्र गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद रॉय से डॉ.रॉय सेबास्टियन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष (मानव संसाधन), एचएलएल ने क्षेत्रीय नराकास राजभाषा सम्मान हासिल किया।

टोलिक की इस उपलब्धि के लिए अगुआ किये एवं राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने के उपलक्ष्य में डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), एचएलएल एवं सदस्य सचिव नराकास (उपक्रम) को बिहार के माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मुहम्मद खान ने प्रशस्ति पत्र दिया।

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2024

केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों के हिंदी पखवाड़ा समारोह का शुभारंभ 14 सितंबर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में संपन्न हुआ। उद्घाटन समारोह में हमारी कंपनी के विविध यूनिटों के प्रतिनिधियों ने भाग लिए।

हिंदी भारत की अस्मिता की पहचान एवं हरेक भारतीय की हृदय की भाषा है। अतः राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, बाज़ारी भाषा, विश्वभाषा एवं संघ सरकार की राजभाषा जैसे विविध विधाओं में विराजित हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रोन्नमन तथा राजभाषा नीति के सख्त अनुपालन के लिए कंपनी द्वारा बहिरंग कार्यक्रम लगातार आयोजित किया जा रहा है। इस क्रम में कंपनी में हिंदी पखवाडा समारोह भी वैविद्यपूर्ण गतिविधियों से मनाया गया।

आगे, 19 & 20 सितंबर 2024 को कर्मचारियों के लिए आयोजित निबंध लेखन, अनुवाद, टिप्पण व आलेखन, तस्वीर क्या बोलती है, वक्तृता, प्रशासनिक शब्दावली, हिंदी कविता पाठ, समाचार वाचन, देशभक्ति गीत, फिल्मी गीत प्रतियोगिताओं में 30 कर्मचारियों की भागीदारी हुई। 29 सितंबर 2024 को पेरूरकडा फैक्टरी में कर्मचारियों के बच्चों के लिए विविध हिंदी प्रतियोगिताएँ- निबंध लेखन, अनुवाद, वक्तृता, हिंदी कविता पाठ, श्रुत लेखन, सुलेख, देशभक्ति गीत, फिल्मी गीत आयोजित की गईं। इनमें प्राइमरी, मिडिल स्कूल, हाइस्कूल और कॉलेज स्तर के 12 बच्चों ने सक्रिय रूप से भाग लिये।

संघ नेताओं के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम एवं हिंदी वार्तालाप सत्र - कंपनी के कर्मचारियों को अपना सरकारी काम हिंदी में भी करने के लिए प्रेरित करने और उसके लिए आवश्यक प्रशिक्षण देना ज़रूरी है। साथ ही साथ कर्मचारियों विशेष संघ नेताओं को शासकीय या संघ से संबंधित दौरा करने के वक्त हिंदी में बातचीत करना पड़ता है। इसलिए उनको हिंदी में बातचीत करने में अभ्यास देने की ओर कंपनी के हिंदी पखवाडा समारोह के दौरान 23.09.2024 को संघ नेताओं के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम एवं हिंदी वार्तालाप सत्र आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती एल.जी.स्मिता, यूनिट मुख्य, एचएलएल - पेरूरकडा फैक्टरी द्वारा किया गया। डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) और श्री रमेश मोहन, वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन) ने क्रमशः स्वागत एवं धन्यवाद का काम संभाला। श्री ए.सोमदत्तन, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा), मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, तिरुवनंतपुरम ने सत्र का संचालन किया। इस कार्यशाला से एचएलएल की पेरूरकडा और आक्कुलम फैक्टरियों के 20 कर्मचारीगण (संघ नेता) प्रशिक्षित हुए।

कार्यपालकों के लिए हिंदी प्रतियोगिता - हिंदी पखवाडा समारोह के दौरान 24 सितंबर 2024 को उप महा प्रबंधक स्तर से सह उपाध्यक्ष स्तर तक के अधिकारियों के लिए राजभाषा नीति, निर्देशों और सरल हिंदी नेमी कार्यालयीन टिप्पणियों पर हिंदी प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें अधिकांश अधिकारीगण ने बडी उत्सुकता से भाग लेकर कार्यक्रम को एकदम सफल बना दिया। एचएलएल-सीएचओ के श्री यु.नागराजन, उप महा प्रबंधक (ईआरपी), श्री अनिल शंकर, उप उपाध्यक्ष (सतर्कता) और श्री अज़र हयात, उप महा प्रबंधक (वित्त) को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त हुए।

हिंदी फोरम के सदस्यों के लिए प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता - कंपनी के हर अनुभाग के हिंदी कार्यान्वयन को बढाने के उद्देश्य से प्रत्येक यूनिट में हिंदी फोरम गठित किया गया है। हिंदी पखवाडा के दौरान, कंपनी के तिरुवनंतपुरम की यूनिटों और सहायक कंपनी, हाइट्स के हिंदी फोरम के सदस्यों के लिए 27.09.2024 को निगमित मुख्यालय के अक्षया हॉल में राजभाषा और सामान्य ज्ञान पर

आधारित हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। कंपनी के विविध यूनिटों के चार टीमों ने बडी प्रतिस्पर्धा के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लिया। एएफटी, पीएफटी और हाइट्स के टीम को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त हुए और हाइट्स के दूसरे टीम को सांत्वना पुरस्कार भी मिला। इस प्रतियोगिता में श्री ए.सोमदत्तन, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा), मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, तिरुवनंतपुरम ने विधिनिर्णायक का काम संभाला।

हिंदी पखवाडा - समापन समारोह

एचएलएल के हिंदी महोत्सव का समापन समारोह 16 अक्टूबर 2024 को पेरूरक्कडा फैक्टरी में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम का उद्घाटन दूरदर्शन केंद्र, तिरुवनंतपुरम के उप महा निदेशक, श्री एन.एस. सनिल कुमार ने किया। उन्होंने कहा कि हिंदी सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा है। हिंदी जानना और पढना हरेक के लिए अत्यंत आवश्यक है। हिंदी भाषा के प्रोन्नमन के लिए केंद्र सरकार के कार्यालयों को आगे आना चाहिए, क्योंकि यह उनके लिए संवैधानिक उत्तरदायित्व है।

एचएलएल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ.अनिता तंपी ने समारोह की अध्यक्षता करके कहा कि हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना हमारी सामाजिक जिम्मेदारी होने के साथ-साथ केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा नीति को लागू करना संवैधानिक प्रावधान भी है। इस पर ज़ोर देते हुए हम कंपनी में मासिक तौर पर विविध प्रकार के हिंदी कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। साथ ही, हिंदी पखवाडा के दौरान वैविध्यपूर्ण हिंदी प्रतियोगिताएँ भी आयोजित कर सके।

एचएलएल के निदेशक (विपणन), श्री अजीत एन ने अपने आशीर्वाद भाषण में कहा, विभिन्न भाषा-भाषी लोगों से समृद्ध भारत में भाषाई एकता लाने में एकदम समर्थ भाषा हिंदी है। जिससे हरेक कर्मचारी अपनी प्रतिबद्धता को मानते हुए कंपनी की राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर प्रोन्नमन में सक्रिय रूप से अधिकाधिक काम हिंदी में भी करें। पेरूरकडा फैक्टरी के महा प्रबंधक, श्री वेणुगोपाल एस और निगमित

मुख्यालय के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), डॉ.सुरेष कुमार आर ने क्रमशः स्वागत एवं धन्यवाद भाषण दिया। एचएलएल के विभिन्न यूनिटों के कार्यालय प्रमुख, उच्च प्रबंधन दल, वरिष्ठ अधिकारी, संघ नेता, कर्मचारियों और बच्चों की उपस्थिति से यह समारोह एकदम शानदार बन गया।

राजभाषा चल वैजयन्ती

एचएलएल के यूनिटों में प्रभावी तौर पर राजभाषा निष्पादन लाने के उद्देश्य से, एचएलएल के यूनिटों के बीच में उत्कृष्ट रूप से राजभाषा कार्यान्वयन करनेवाले कार्यालय के लिए, कंपनी में एक राजभाषा चल वैजयन्ती संस्थापित की गयी है। वर्ष 2024 के इस शील्ड के लिए हाइट्स को विनिर्णीत किया गया है। हिंदी पखवाडा के समापन

समारोह के दौरान यह रोलिंग शील्ड, हाइट्स, तिरुवनंतपुरम के प्रधान, श्री के जे श्रीकुमार ने दूरदर्शन केंद्र के उप महा निदेशक से हासिल किया।

इसके अलावा मुख्य अतिथि द्वारा हिंदी पखवाडा समारोह के दौरान कंपनी के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं उनके बच्चों केलिए आयोजित विविध हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं, एसएसएलसी/सीबीएसई/प्लस टू परीक्षाओं में हिंदी विषय में 'ए' ग्रेड या 90% से अधिक अंक प्राप्त कर्मचारियों के बच्चों, उप महा प्रबंधक स्तर से सह उपाध्यक्ष स्तर तक के अधिकारियों के लिए आयोजित हिंदी प्रतियोगिता के विजेताओं और हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार कराने तथा राजभाषा केद्द प्रयोग में गुणात्मक सुधार लाकर कर्मचारियों के मन में इसके प्रति रुचि बढाने के उद्देश्य से हमारी कंपनी में हर साल अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस बार राजभाषा सम्मेलन का विषय हमारी कंपनी से संबंधित था यानी "एचएलएल 2025 के बारे में आपका दृष्टिकोण" कंपनी के कर्मचारियों के लिए 25 जुलाई 2024 को एचएलएल निगमित मुख्यालय के अक्षया हॉल में पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण/वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग/ सीधे मोड के ज़रिए यह अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें एचएलएल के विभिन्न यूनिटों/समनुषंगी कंपनियों से 15 अधिकारियों और कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी हुई। श्री एन.सामराज, सेवानिवृत्त राजभाषा अधिकारी, दक्षिण रेलवे, तिरुवनंतपुरम ने इस कार्यक्रम का विधिनिर्णायक रहा। एचएलएल-केएफसी के श्रीमती दीप्ति विजयन, उप प्रबंधक (एच आर) और श्रीमती संयुक्ता एस, उप प्रबंधक (वित्त) को क्रमशः प्रथम एवं द्वितीय स्थान मिला तथा समनुषंगी कंपनी, हाइट्स, नोएडा के श्रीमती सुमन प्रभा, एम जी 6 को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। उत्तम तीन प्रस्तुतीकरण को क्रमशः ₹5000/-, ₹4000/- और ₹3000/- का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

कंठस्थ प्रशिक्षण कार्यक्रम

कंठस्थ 2.0 ट्रांसलेशन मेमोरी तथा न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित मशीन साधित अनुवाद प्रणाली है। इस अनुवाद सिस्टम से अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। स्मृति आधारित इस अनुवाद सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इस में यूज़र द्वारा किए गए अनुवाद कार्य को संगृहीत किया जाता है जिसे किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः प्रयोग किया जा सकता है। इससे हमारी नेमी कार्यालयीन काम में बहुत अधिक सहायता मिलती है। वास्तव में यह टूल हिंदी कार्मिकों को अपना काम आसानी से करने के लिए एकदम सहायक है। इस टूल का नया वर्ज़न कंठस्थ 2.0 का परिचय करने के लिए कंपनी के विभिन्न यूनिटों के हिंदी कार्मिकों और हिंदी फोरम के सदस्यों के लिए एक दिवसीय 'कंठस्थ प्रशिक्षण कार्यक्रम' 13.08.2024 को निगमित मुख्यालय के अक्षया हॉल में आयोजित किया गया। कैनरा बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री षोजो लोबो ने इस सत्र का संचालन किया। डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने सबका स्वागत किया। कंपनी के विविध यूनिटों के संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर लाभ उठाए।

राजभाषा नीति पर परिचय कार्यक्रम

कंपनी के कर्मचारियों को राजभाषा नीति के बारे में अवगत कराने और हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करने की ओर 13.06.2024 को राजभाषा नीति पर परिचय कार्यक्रम आक्कुलम फैक्टरी, तिरुवनंतपुरम के आई टी प्रशिक्षण हॉल में आयोजित किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन, आक्कुलम फैक्टरी के यूनिट मुख्य, श्री मुकुंद आर ने किया। आक्कुलम फैक्टरी के सह उपाध्यक्ष (एच आर), श्री प्रवीण ने सबका स्वागत किया। डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने कंपनी में हिंदी कार्यान्वयन की आवश्यकता पर भाषण दिया। क्लास का संचालन, आयकर कार्यालय के सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा), श्री ए.सोमदत्तन ने किया। कंपनी के विविध यूनिटों एवं कार्यालयों के 27 कर्मचारियों ने इस क्लास का लाभ उठाया।

रोज़ एक शब्द पढिए कार्यक्रम - स्मरण परीक्षा

कंपनी के विविध यूनिटों के राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगति लाने की दृष्टि से 'रोज़ एक शब्द पढिए कार्यक्रम' के अधीन प्रति दिन कंप्यूटर के आई पी मेसेंजर एवं स्वागत कक्ष में रखे एलसीडी के माध्यम से दिये जा रहे हिंदी एवं समानार्थी अंग्रेज़ी शब्द के आधार पर स्मरण परीक्षा आयोजित की जाती है। इस क्रम में, 28.06.2024, 12.08.2024,11.11.2024, 28.03.2025 को आयोजित स्मरण परीक्षाओं में कुल 61 कर्मचारियों की भागीदारी हुई। यह कार्यक्रम कंपनी के सभी यूनिटों में आयोजित करके विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये।

राजभाषा निरीक्षण

कंपनी के हरेक कर्मचारी अपना अधिकाधिक शासकीय कार्य हिंदी में भी करने के लिए प्रोत्साहित करने की ओर म बीच - बीच में कंपनी के सभी अनुभागों का निरीक्षण करते हैं। साथ ही कंपनी के विभिन्न यूनिटों के बीच में संस्थापित राजभाषा चल वैजयन्ती एवं अग्रणी अनुभाग पुरस्कार से यूनिट एवं अनुभाग को प्रोत्साहित भी किया जा रहा है। इस दृष्टि से 26.09.2024 को श्री एन.सामराज, सेवानिवृत्त राजभाषा अधिकारी, रेलवे, तिरुवनंतपुरम द्वारा ऑनलाइन के माध्यम से पेरूरकड़ा फैक्टरी, आक्कुलम फैक्टरी, कनगला फैक्टरी, काक्कनाड फैक्टरी, मुंबई कार्यालय और हाइट्स का राजभाषा निरीक्षण किया गया। इसके अतिरिक्त डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा),एचएलएल द्वारा 04.04.2024 को आक्कुलम फैक्टरी का भी राजभाषा निरीक्षण किया गया।

विश्व हिंदी दिवस & अखिल भारतीय हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता

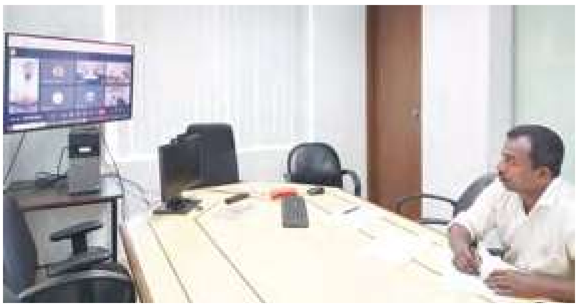

विश्व हिंदी दिवस समारोह के सिलसिले में एचएलएल के सभी यूनिटों एवं समनुषंगी कंपनियों के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए 10 जनवरी 2025 को पूर्वाह्न 10.00 बजे से अपराह्न 1 बजे तक ऑनलाइन के ज़रिए अखिल भारतीय हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रत्येक यूनिट से अधिकतम 3 प्रतिभागी भाग ले सकते थे। कंपनी के विविध यूनिटों एवं कार्यालयों के 18 कर्मचारियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। एचएलएल-केएफसी के श्री सुदीप बी, उप महा प्रबंधक (उत्पादन एवं इंजीनियरी), श्रीमती नबीज़त, भंडार सहायक, पीएफटी और श्रीमती वर्षा देरे, एमआईएस & वस्तुसूची सहायक, मुंबई कार्यालय को क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान तथा श्रीमती रंजू आर नायर, मानव संसाधन सहायक, पीएफटी और श्री जी.बी.मुन्यल, अधिकारी 4, केएफबी को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुए। डॉ.बिनु डी, असिस्टेंट प्रोफसर, हिंदी विभाग, सरकारी महिला कॉलेज, तिरुवनंतपुरम ने इस प्रतियोगिता का निर्णायक रहा। डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने सभी का स्वागत किया।

हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता

एचएलएल - पेरूरकडा फैक्टरी में सामाजिक मीडिया पर लत विषय पर आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में दस कर्मचारियों की भागीदारी हुई। इन में श्रीमती षेरिन बी एस, लेखा सहायक, श्रीमती नबीसत एच, भंडार सहायक, श्रीमती रंजु आर नायर, मानव संसाधन सहायक और श्रीमती आमिना, डिप्लोमा प्रशिक्षार्थी को क्रमशः पहला, दूसरा, तीसरा एवं चौथा पुरस्कार मिला और आक्कुलम फैक्टरी में परिवार में सामाजिक मीडिया का प्रभाव विषय पर आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में श्रीमती चित्रलेखा, एमजी 3, श्रीमती मीरा आर, एमजी 3, श्रीमती सिमि वी एस एसजी 1 और श्री प्रशांत के एसजी 2 को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ।

स्कूल के बच्चों के लिए हिंदी प्रतियोगिताएँ

हिंदी भाषा के प्रचार एवं प्रसार के भाग के रूप में एचएलएल ने चिन्नम्मा मेमोरियल सरकारी हायर सेकंडरी स्कूल, पूजप्पुरा, तिरुवनंतपुरम के युपी, हाईस्कूल एवं हायर सेकंडरी स्तर के बच्चों के लिए 10.10.2024 को विविध हिंदी प्रतियोगिताएँ (निबंध लेखन, सुलेख, कविता पाठ, हिंदी वाचन) आयोजित कीं। इन प्रतियोगिताओं में स्कूल के विभिन्न स्तर के 57 विद्यार्थीगण अत्यंत उत्सुकता के साथ सक्रिय रूप से भाग लिए गए। उक्त प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं सभी प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किए गए। एचएलएल निगमित मुख्यालय के हिंदी टीम द्वारा इस कार्यक्रम का संचालन किया गया।

हिंदी फोरम बैठक

कंपनी के राजभाषा कार्यान्वयन में बढावा लाने की दृष्टि से, हर कार्यालय के प्रत्येक विभाग या अनुभाग के हिंदी के प्रोन्नमन में अधिक ध्यान देते हुए सभी यूनिटों में एक हिंदी फोरम का गठन किया गया। इस श्रेणी में, एचएलएल के निगमित मुख्यालय में 11 जून 2024 को और आक्कुलम फैक्टरी में 04.09.2024 को हिंदी फोरम की बैठक आयोजित की गयीं। इन बैठकों में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए नवाचार कार्यक्रमों के बारे में चर्चा हुई।

आज का विचार

एचएलएल के देश भर के यूनिटों एवं सहायक कंपनियों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हफ्ते में एक हिंदी वाक्य पढने का अवसर प्रदान करने तथा उनके मन में हिंदी भाषा के प्रति रुचि पैदा करते हुए अपना कार्यालयीन काम हिंदी में करके हिंदी विभाग के साथ सहयोग देने का मनोभाव पैदा करने के उद्देश्य से 'आज का विचार' शीर्षक पर महान व्यक्तियों के उद्धरण सभी कर्मचारियों के ई - मेल के माध्यम से हफ्ते में एक दिन अग्रेषित किया जाता है। एचएलएल के सभी यूनिटों के कर्मचारियों से इस के प्रति अच्छी प्रतिक्रियायें मिल रही हैं।

हिंदी टिप्पण और आलेखन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण

कंपनी के विविध यूनिटों और सहायक कंपनी के हिंदी फोरम के सदस्यों और पारंगत परीक्षा में उत्तीर्ण हुए कर्मचारियों के लिए हिंदी टिप्पण और आलेखन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण 12.02.2025 को पेरूरकडा फैक्टरी के जवहरलाल नेहरू जन्मशताब्दी स्मारक कल्याण केंद्र में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य, प्रतिभागियों को हिंदी में कार्यालय प्रक्रिया, टिप्पण व आलेखन से संबंधित ज्ञान एवं कौशल से सज्जित करना और इसके लिए आवश्यक मार्गनिर्देश देना। उक्त कार्यक्रम में 24 अधिकारी/कर्मचारी भाग लेकर फायदा उठाए गए। श्री सोमदत्तन, सेवानिवृत्त उप निदेशक, आयकर विभाग ने कार्यक्रम का संचालन किया। डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), एचएलएल ने सबका स्वागत किया।

गणतंत्र दिवस समारोह

एचएलएल निगमित मुख्यालय में 26 जनवरी, 2025 को मनाये गये गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर, निगमित मुख्यालय के विविध अनुभागों के राजभाषा कार्यान्वयन पर प्रगति लाने की ओर लगाये गये अग्रणी अनुभाग पुरस्कार और टिप्पण एवं आलेखन पुरस्कार विजेताओं को वितरित किये गये। एचएलएल निगमित मुख्यालय के लिए अग्रणी अनुभाग पुरस्कार (रोलिंग शील्ड एवं नकद पुरस्कार) अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, डॉ.अनिता तंपी से निगमित मुख्यालय के सुरक्षा अनुभाग के मुख्य सुरक्षा अधिकारी श्री तंपी एस दुर्गादत्त आई पी एस एवं पर्यवेक्षक (सुरक्षा) श्री षाजी वर्गीस ने हासिल किया। आगे, टिप्पण एवं आलेखन के लिए नकद पुरस्कार श्री रतीष.आर, अधिकारी 3 और श्रीमती धन्या. सी.एस, कार्यालय सहायक को प्रदान किया।

कॉलेज विद्यार्थियों के लिए राज्य स्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण

राजभाषा हिंदी के प्रभावोत्पादक उन्नयन पर विचार करके हम केवल कंपनी के आंतरिक कार्यक्रमों में ही नहीं राज्य के अन्य संस्थाओं के साथ जुडकर भी कार्य कर रहे हैं। साथ ही, हम राज्य के कॉलेज विद्यार्थियों के लिए हर वर्ष किसी न किसी कार्यक्रम आयोजित करते हैं। इस वर्ष में हम ने कॉलेज विद्यार्थियों के लिए राज्य स्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण 15 फरवरी 2025 को ऑनलाइन के ज़रिए आयोजित किया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य प्रतिभागियों को अनुवाद अध्ययन के सिद्धांत एवं व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करना है। यूनिवर्सिटी कॉलेज के हिंदी विभागाध्यक्ष (सेवानिवृत्त), डॉ.पी.जे. शिवकुमार ने क्लास का संचालन किया। उन्होंने अनुवाद की उत्पत्ति से लेकर इसके विभिन्न पहलुओं के बारे में व्याख्या देते हुए प्रतिभागियों की शंकायें दूर करने की कोशिश की। उक्त प्रशिक्षण में राज्य के विविध कॉलेजों के 132 विद्यार्थियों ने भाग लेकर इसका फायदा उठाया। इस सत्र में उपस्थित सभी प्रतिभागियों का स्वागत डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा), एचएलएल द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में भाग लिये सभी विद्यार्थियों को प्रतिभागिता प्रमाणपत्र दिये जाते हैं।

विश्व मातृभाषा दिवस और भारतीय भाषा कवि सम्मेलन

कविताएँ भारतीय संस्कृति और चेतना का अभिन्न अंग है। वर्ष के दौरान कंपनी की ओर से विश्व मातृभाषा दिवस के सिलसिले में यानी 21 फरवरी 2025 को ऑनलाइन/ऑफलाइन के ज़रिए भारतीय भाषा कवि सम्मेलन आयोजित किया गया। इससे हमारा उद्देश्य है, कंपनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वरचित कवितायें, चाहे वह मातृभाषा में हो या हिंदी में हो, प्रस्तुत करने के लिए मंच प्रदान करके उनकी सर्गात्मकता को विकसित करना। इस कार्यक्रम में कंपनी के विविध यूनिटों और सहायक कंपनियों से 40 अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा अपनी कवितायें प्रस्तुत की गयीं। कविता पाठ करनेवालों को रु.500/- का नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। डॉ.सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। श्रीमती शालिनी.एस.एस, अधिकारी ने कंपयरिंग का काम संभाला।

हिंदी रंगोत्सव और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

कंपनी के विभिन्न यूनिटों के कर्मचारियों के लिए 20 मार्च 2025 को पेरूरकडा फैक्टरी के जवहरलाल नेहरु जन्मशताब्दी स्मारक कल्याण केंद्र में हिंदी रंगोत्सव और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित किया गया। प्रश्नोत्तरि प्रतियोगिता में 7 टीमों ने बहुत सक्रिय रूप से भाग लिया। टीम ए (सुश्री आमिना.एस, श्री राजकिरण.डी) और टीम बी (श्रीमती नबीसत.एच, श्री राहुल.आर) को प्रथम पुरस्कार, टीम सी (सुश्री मंजिमा.एम.एस और श्रीमती रेणु.आर.नायर) को द्वितीय पुरस्कार और टीम डी (सुश्री षेरिन.बी.एस, सुश्री ऐश्वर्या.एम.सी) और टीम ई (ऋत्विक.एच.एस, श्री मिथुन.एम) को तृतीय पुरस्कार मिला। बाकी दो टीमों को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। कुल-मिलाकर 14 कर्मचारियों ने प्रश्नोत्तरी प्रतियोदिता में भाग लिया। बाद में, कंपनी के विविध यूनिटों के कर्मचारियों की सहभागिता से हिंदी रंगोत्सव शानदार तरीके से आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री ए.सोमदत्तन, सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (राजभाषा), आयकर कार्यालय, तिरुवनंतपुरम विधिनिर्णायक था। डॉ. सुरेष कुमार.आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा सबका स्वागत किया गया।

बाहरी कार्यक्रमों में भागीदारी

राजभाषा विभाग, केंद्र गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 14 सितंबर 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी पखवाडा का उद्घाटन समारोह एवं चतुर्थ राजभाषा सम्मेलन में एचएलएल के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डॉ. सुरेष कुमार.आर और एचएलएल - हाइट्स के राजभाषा अधिकारी श्रीमती हेमा षाजी ने भाग लिया।

केंद्र गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली द्वारा 04.01.2025 को कर्नाटक मुक्त विश्वविद्यालय, कोनवेकेशन भवन, मैसूर में आयोजित दक्षिण - पश्चिम क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में एचएलएल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष (मानव संसाधन) डॉ.रॉय सेबास्टियन और वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डॉ.सुरेष कुमार. आर ने भाग लिया।

भारतीय रिज़र्व बैंक, तिरुवनंतपुरम द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के सदस्य कार्यालयों के लिए 04 दिसंबर, 2024 को होटेल हैसेंट, तिरुवनंतपुरम में आयोजित एक दिवसीय हिंदी संगोष्ठी में एचएलएल के डॉ.सुरेष कुमार. आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) और श्रीमती आशा.एम, हिंदी अधिकारी की भागीदारी हुई। इस कार्यक्रम में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) के सदस्य कार्यालयों से 11 हिंदी कार्मिकों की उपस्थिति हुई।

सेंट्रल बैंक, तिरुवनंतपुरम द्वारा 06 मार्च, 2025 को होटेल डिमोरा, तिरुवनंतपुरम में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में एचएलएल के डॉ.सुरेष कुमार आर, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) और श्रीमती शालिनी.एस, हिंदी अधिकारी की उपस्थिति हुई। इस कार्यक्रम में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) के सदस्य कार्यालयों से कुल 5 हिंदी कार्मिकों की भागीदारी हुई।

एचएलएल - मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

हिंदी पखवाड़ा समारोह

एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड, क्षेत्रीय कार्यालय भवन, मुंबई, खारघर में 23 सितंबर 2024 से हिंदी पखवाड़ा समारोह श्री हरि आर पिल्लै खारघर कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख एवं उप उपाध्यक्ष (डब्लियु सी) एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष की अनुमति से आयोजित किया गया।

सर्वप्रथम 23 सितंबर 2024, अपराह्न 4.00 बजे को आयोजित हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह में कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी कर्मचारियों द्वारा राजभाषा संबंधी प्रतिज्ञा ली गयी और यह सुनिश्चित किया गया कि सभी अपना हिंदी का कार्य रुचि के साथ करें।

हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह के बाद निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं।

हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह

हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण 4 अक्तूबर 2024 शाम 5.00 बजे को आयोजित किया गया। श्री हरि आर पिल्लै राजभाषा कार्यान्वयन के अध्यक्ष, एचएलएल मुंबई, खारघर कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख एवं उप उपाध्यक्ष (डब्लियु सी) की उपस्थिति में स्वागत भाषण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। आगे, कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी श्री अरुण गंगाधरण (उप महा प्रबंधक, एचसीएस) ने श्री गौरव कुमार शर्मा, श्री अजित पिल्लै, प्रबंधक (मानव संसाधन),एचसीएस एवं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का कार्यक्रम में उपस्थित होने एवं निर्णायक मंडल का भाग बनने एवं सहयोग देने के लिए धन्यवाद अदा किया।

हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में सभी विजेताओं को राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष द्वारा पुरस्कार एवं प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया गया और अन्य प्रतिभागियों को प्रतिभागिता प्रमाण-पत्र भी दिये गये।

हिंदी निबंध प्रतियोगिता - 23 सितंबर 2024

प्रथम स्थान - श्री अजित पिल्लै, प्रबंधक (मानव संसाधन), एच सी एस
द्वितीय स्थान - कु.जानकी मदगिरी, प्रयोगशाला तकनीशियन
तृतीय स्थान - श्रीमती वर्षा बालकृष्ण डेरे, इनवेंटरी एच सी एस

कविता पाठ प्रतियोगिता (स्वरचित/प्रसिद्ध कवि द्वारा लिखित कविता) - 25 सितंबर 2024

प्रथम स्थान - कु.जानकी मदगिरी, प्रयोगशाला तकनीशियन
द्वितीय स्थान - कु.अंजुम खान, रिसेप्शनिस्ट
तृतीय स्थान - कु.रेखा चौधरी, खाता सहायक

वाद विवाद प्रतियोगिता - 24 सितंबर 2024

विजेता टीम के नाम
श्री अजित पिल्लै,
प्रबंधक (मानव संसाधन), एच सी एस
श्री रोशन चंद्रकांत शेलार,
सुविधा सहायक
श्री अक्षय जठार
(मानव संसाधन एवं व्यवस्थापक)
कु.मनाली डी पंडित,
इनवेंटरी एचसीएस
कु.अंजुम खान, रिसेप्शनिस्ट

पाठ सारांश प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता -25 सितंबर 2024

प्रथम स्थान - श्री रोशन चंद्रकांत शेलार, सुविधा सहायक
द्वितीय स्थान -श्री अक्षय जठार, मानव संसाधन एवं व्यवस्थापक
तृतीय स्थान - कु.विद्या सैद, खाता सहायक

पुरस्कार वितरण

श्री एन.एस. सनिल कुमार, उप महा निदेशक, दूरदर्शन केंद्र, तिरुवनंतपुरम और डॉ. अनिता तंपी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड द्वारा पुरस्कार वितरित किये जाते हैं। साथ हैं - श्री अजीत.एन, निदेशक (विपणन), एचएलएल।

हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता

HLL Lifecare Limited

HLL Lifecare Limited

HLL Lifecare Limited

HLL Lifecare Limited

HLL Lifecare Limited

HLL Lifecare Limited

एम्स में हिंदलैब्स : देशभर में गुणवत्तापूर्ण एवं किफायती निदान सुनिश्चित करना

किफायती और विश्वसनीय स्वास्थ्य रक्षा निदान दुनियाभर के व्यक्तियों के लिए एक मौलिक आवश्यकता है। हिंदलैब्स, भारत के सबसे अधिक मांगवाले इमेजिंग और नैदानिक नेटवर्क में से एक है, जो कई वर्षों से प्रतिष्ठित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) सहित भारत के प्रमुख संस्थानों में किफायती दरों पर उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा, नैदानिक और इमेजिंग सेवाएं प्रदान कर रहा है।

हिंदलैब्स केंद्र वर्तमान में निम्नलिखित स्थानों पर कार्यरत हैं:

1.एम्स मंगलगिरी, आंध्र प्रदेश
2.एम्स बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश
3.एम्स देवघर, झारखंड
4.एम्स नागपुर, महाराष्ट्र
5.एम्स भोपाल, मध्य प्रदेश
6.एम्स गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
7.एम्स गुवाहाटी, असम
8.एम्स रायपुर, छत्तीसगढ़

इन प्रमुख संस्थानों के अवसंरचना, विशेषज्ञता और प्रतिष्ठा का लाभ उठाकर, हिंदलैब्स व्यापक जन समुदाय तक किफायती स्वास्थ्य रक्षा निदान के लिए अपनी पहूँच और प्रतिबद्धता का विस्तार करता है। इन एम्स केंद्रों में आनेवाले मरीज़ों को अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं, उन्नत तकनीक और उच्च कुशल पेशेवरों की एक टीम द्वारा समर्थित नैदानिक परीक्षणों और सेवाओं की एक व्यापक श्रेणी की पहूँच प्राप्त होती है। ये सेवाएँ सटीक निदान, विश्वसनीय परिणाम और समय पर देखभाल सुनिश्चित करती हैं। 40-60% छूट पर सेवाएँ प्रदान करके, हिंदलैब्स का लक्ष्य गुणवत्ता मानकों को बनाए रखते हुए मरीज़ों का वित्तीय बोझ कम करना है। हिंदलैब्स की स्थापना 2008 में सबसे किफायती दरों पर सर्वोत्तम चिकित्सा निदान सेवाएँ प्रदान करने के मुख्य उद्देश्य से की गई थी। शुरुआत में एकल नैदानिक लैब से लेकर पूरे भारत में 4000 से अधिक अस्पतालों और 221 स्टैंडअलोन केंद्रों के विशाल नेटवर्क से, हिंदलैब्स ने अपनी पहूँच का विस्तार किया है और खुद को भारत में सबसे बड़े और अत्यधिक पसंदीदा हेल्थकेयर नेटवर्क में से एक बन गया है। उन्नत और अत्याधुनिक उपकरणों से सशक्त स्वास्थ्य रक्षा पेशेवरों की एक समर्पित टीम, हर दिन 35,000 से अधिक रोगियों को त्रुटिहीन सेवा प्रदान करती हैं। हिंदलैब्स ने लगभग 205 मिलियन नैदानिक परीक्षण किए हैं, जिसमें 90 मिलियन लोगों को लाभ हुआ है, जिससे बाज़ार दरों की तुलना में 20000 मिलियन की बचत हुई है।

अमृत फार्मेसी श्रृंखला - स्वास्थ्य सेवा में पहली रीटेल क्रांति उत्कृष्टता के 10 वीं वर्ष में ।

अब तक 554 लाख के रोगियों को लाभ

नई अस्पताल फार्मेसियों के लिए एसईसीएल के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

अमृत (उपचार के लिए सस्ती दवाइयाँ और विश्वसनीय इंप्लांट्स)

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा शुरू की गई इस तरह की पहली फार्मेसी श्रृंखला, 15 नवंबर, 2024 को दसवें वर्ष में कदम रखा। भारत भर में अमृत परियोजना को लागू करने की नोड़ल एजेंसी एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड है। पिछले दशक में, अमृत आवश्यक दवाओं, जीवन रक्षा दवाओं और चिकित्सा उपकरणों को अत्यधिक किफायती कीमतों पर उपलब्ध कराकर क्रांति लायी है, जिससे गंभीर स्वास्थ्य और वित्तीय चुनौतियों का सामना कर रहे लाखों लोगों को फायदा हुआ है। अमृत फार्मेसी को स्वास्थ्य सेवा में एक अद्वितीय, इस तरह की पहली रीटेल क्रांति के रूप में मान्यता प्राप्त है, जो सभी भारतीयों के लिए स्वास्थ्य सेवा अधिक सुलभ बनाती है ।

पहली अमृत रीटेल फार्मेसी का उद्घाटन 15 नवंबर 2015 को एम्स, नई दिल्ली में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे.पी.नड्डा द्वारा किया गया, जो एक परिवर्तनकारी यात्रा की शुरुआत थी। सिर्फ एक आउटलेट से शुरू होकर, एचएलएल द्वारा समर्थित अमृत फार्मेसी श्रृंखला अब देश भर में 216 से अधिक फार्मेसियों तक फैल चुकी है। यह श्रृंखला उत्पादों की एक विस्तृत रेंज, एमआरपी से 50% तक की छूट पर, प्रदान करती है, जिसमें ऑन्कोलॉजी और कार्डियोलॉजी के लिए विशेष दवाएं, स्टेंट, ऑर्थोपिडिक इम्प्लांट, मेडिकल डिस्पोजेबल और कई तरह की ब्रांडड और जेनेरिक दवाएं शामिल हैं। अमृत फार्मेसी भारत भर के सभी एम्स परिसरों और राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों में उपलब्ध हैं।

इसके चालू विस्तार योजनाओं के हिस्से के रूप में, अमृत ने एस ई सी एल के निगमित और केंद्रीय अस्पतालों में फार्मेसी संस्थापित करने के लिए साउथ ईस्टर्न कोल फील्ड्स (एस ई सी एल) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एम ओ यु) पर हस्ताक्षर किया हैं। अधिक सरकारी अस्पताल परिसरों में अमृत श्रृंखला लाने के लिए और विस्तार योजनाएं चल रही हैं।

आज, अमृत फार्मेसी 25 से ज़्यादा राज्यों और 4 केंद्र शासित प्रदेशों में संचालित होती हैं, जिनमें तिरुवनंतपुरम के पेरूरकड़ा और पुलयनारकोट्टा में स्थित दो केंद्र शामिल हैं। हाल ही में, एम्स रायबरेली ने अमृत फार्मेसी सेवा को अगले 10 वर्षों के लिए बढ़ा दिया है। अमृत केंद्रों में 6500 से अधिक दवाएं एवं मेडिकल उत्पाद उपलब्ध हैं और आज तक 554 लाख से ज़्यादा मरीज़ों को इसका फायदा मिला है। इन मरीज़ों को एमआरपी से रु.6000 करोड़ की बचत होती है।

अमृत श्रृंखला एम्स, मेडिकल कॉलेज, जिला अस्पताल और जनरल अस्पताल जैसी तृतीयक स्वास्थ्य सुविधाओं का समर्थन करती है, जो पूरे भारत में आवश्यक दवाओं और स्वास्थ्य सेवा आपूर्ति के लिए एक विश्वसनीय स्रोत के रूप में कार्य करती है। इसने विशेष रूप से आर्थिक रूप से वंचित समुदायों के लिए स्वास्थ्य रक्षा पहुँच में सुधार के लिए एक स्थायी मॉडल तैयार किया है।

अपशिष्ट प्रबंधन के लिए एक अभिनव मॉडल के रूप में एचएलएल

स्याही कलम पर लौटें।

एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड ने प्लास्टिक के उपयोग को कम करके कार्बन फुटप्रिंट को कम करने के लिए एक अभिनव योजना बनाई है। "सस्टेन्ड' नाम से शुरू की गई यह परियोजना, अपशिष्ट न्यूनीकरण के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण पेश करती है, जो पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के लिए एक मॉडल के रूप में खडी है। इस पहल का प्राथमिक उद्देश्य, युवा पीढ़ी में पर्यावरण चेतना को विकसित करना और पर्यावरण के अनुकूल आदतों को बढ़ावा देना है।

इस परियोजना में लगभग छह स्वच्छता और अपशिष्ट प्रबंधन कार्यक्रम शामिल हैं, जिनमें 'स्याही कलम पर लौटें' भी शामिल है। पहले चरण में यह परियोजना स्कूल स्तर पर लागू की जाएगी। इस परियोजना का उद्घाटन कोट्टन हिल स्कूल, वषुतक्काड़ में किया गया। इसके तहत विद्यार्थियों को स्याही कलम वितरित किए गए। इसके अलावा, जैविक अपशिष्ट उपचार के लिए बायोगैस संयंत्र, अजैविक अपशिष्टसंग्रह के लिए डिब्बे, स्वच्छ जल उपलब्ध कराने के लिए जल डिस्पेंसर, सैनिटरी पैड जलाने केलिए एचएलएल द्वारा स्वयं विकसित इनसिनरेटर तथा मासिक धर्म कप का वितरण आदि इस कार्यक्रम के हिस्से हैं। इसके अलावा, परियोजना के हिस्से के रूप में कचरा प्रबंधन पर पेंटिंग, ड्राइंग, स्लोगन लेखन और निबंध लेखन जैसी प्रतियोगिताएँ भी आयोजित की जाएंगी। एचएलएल ने स्कूल में परियोजना के कार्यान्वयन के लिए रु.18 लाख आबंटित किया है।

कोट्टन हिल स्कूल में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन वषुतक्काड़ वार्ड कॉउंसिलर श्रीमती राखी रविकुमार ने किया। इस कार्यक्रम में उप निदेशक (शिक्षा) सुबिन पॉल, एचएलएल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष वी कुट्टप्पन पिल्लै, सह उपाध्यक्ष राजीव आर वी, उप उपाध्यक्ष षंनाद षंसुद्दीन, प्रिंसिपल ग्रीष्मा वी, पीटीए अध्यक्ष डॉ.अरुण मोहन एस, एसएमसी अध्यक्ष ब्रिजित लाल, स्कूल की प्रधानाध्यापिका गीता जी आदि ने भाग लिया।

एचएलएल - समाचार

श्री जे.पी.नड्डा, माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, 'मोदी 3.0' के 100 दिवसीय समारोह के दौरान भीष्म क्यूब यूनिटों का निरीक्षण करते हैं। राष्ट्रीय मीडिया केंद्र, नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यक्रम में श्री अपूर्वा चंद्रा आई ए एस, केंद्रीय स्वास्थ्य सचिव (एच & एफ डब्लियु), डॉ.अनिता तंपी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक i/c और श्री एन.अजीत, निदेशक (विपणन) उपस्थित थे।

वायनाड भूस्खलन के पीडितों के लिए राहत प्रयासों का समर्थन करने की ओर, एचएलएल कर्मचारियों का योगदान, मुख्यमंत्री राहत कोष (सीएमडीआरएफ) के प्रति केरल के माननीय मुख्य मंत्री श्री पिनराई विजयन को डॉ.अनिता तंपी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक i/c प्रदान करती हैं। इस अवसर पर श्री एन.अजीत, निदेशक (विपणन) और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक i/c 12 सितंबर, 2024 को आक्कुलम फैक्टरी के पुनर्निर्मित कर्मचारी रिक्रियेशन क्लब हॉल का उद्घाटन करती हैं।

13 सितंबर, 2024 को सहकारी समिति-ओणम उपहार का उद्घाटन करती हैं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक i/c।

श्री वी. कुट्टप्पन पिल्लै, वरिष्ठ उपाध्यक्ष (तकनीकी एवं प्रचालन) 12 जून 2024 को चिन्नम्मा मेमोरियल गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल में स्कूल छात्रों के बीच पठन की आदत बढाने पर लक्षित एचएलएल - मातृभूमि ''मधुरम मलयालम'' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हैं।

डॉ. प्रशांत सी. वी, आरएमओ, रिजनल कॅन्सर सेंटर, तिरुवनंतरुपम द्वारा 07 जून 2024 को पीएफटी में ''नारकोटिक्स & ऑन्कोलॉजी डिसोर्डेर्स'' विषय पर आयोजित कार्यशाला।

पर्यावरण दिवस समारोह

पेरूरकडा फैक्टरी के सेफ फोरम के सदस्य द्वारा 24 जनवरी 2025 को तिरुवनंतपुरम के मानवीयम वीधी में प्रदर्शित फ्लैश मॉब और स्ट्रीट प्ले। यह कार्यक्रम विमुक्ति (ऑन्टि नारकोटिक अभियान) & सिटीज़न सेंटिनल ऑप सड़क सुरक्षा जागरूकता के सहयोग से आयोजित किया गया।

एबल एक्को सेफ फोरम के सदस्य पीएफटी में 04 जुलाई 2024 को औद्योगिक सुरक्षा जागरूकता फ्लैश मॉब का प्रदर्शन करते हैं।

एचएलएल ने राज्य के चयनित सरकारी स्कूलों में सैनिटरी नैपकिन इंसिनरेटर संस्थापित करने के लिए 24 सितंबर 2024 को राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् जयपुर, राजस्थान के साथ एक समक्षौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। श्री अविचल चतुर्वेदी आई ए एस, राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा अभियान, स्कूल शिक्षा विभाग समझौता ज्ञापन स्वीकार करते हुए देखा जाता है।

एचएलएल ने डीटीएल की सीएसआर पहल के अधीन स्कूलों में सैनिटरी नैपकिन इंसिनरेटर संस्थापित करने के लिए 25 सितंबर 2024 को दिल्ली ट्रांसको लिमिटेड (डीटीएल), दिल्ली के साथ एक समझोता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस परियोजना के अधीन चरण 1 में एसएनआई की 369 यूनिटों के साथ 123 सरकारी स्कूलों को कवर किया जाएगा। इस अवसर पर श्री वी कुट्टप्पन पिल्लै, वरिष्ठ उपाध्यक्ष (टी&ओ) प्रभारी, एचएलएल प्रबंधन अकादमी (एचएमए) और श्रीमती सुषमा त्रिपाठी, डी जी एम (टी) सी एस आर सेल, दिल्ली ट्रांसको लिमिटेड (डीटीएल) उपस्थित थे।

पीएफटी में वाल्सल्या चैरिटेबल ट्रेस्ट द्वारा आयोजित 'ओणक्कोडी' वितरण का उद्घाटन करते हैं डॉ.रॉय सेबास्टियन, एस वी पी-एच आर प्रभारी।

श्री रेजी मात्यु ज़करिया, कॉर्पोरेट सॉफ्ट स्किल ट्रेनर 18 सितंबर 2024 को पीएफटी के उत्पादन विभागों के कर्मचारियों के लिए 'कौशल प्रशिक्षण, समस्या समाधान की तकनीक और व्यक्तित्व विकास' विषय पर भाषण देते हैं।

श्री वी. कुट्टप्पन पिल्लै, वरिष्ठ उपाध्यक्ष (टी & ओ) & जीबीडीडी प्रभारी ने 11 फरवरी 2025 को पेरूरकडा फैक्टरी के पड़ोसी समुदाय के लिए एक नि:शुल्क चिकित्सा जांच शिविर का उद्घाटन किया।

डॉ. अनिता तंपी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने एचएलएल में दक्षता एवं डेटा विश्लेक्षण बढ़ाने के लिए 06 जनवरी 2025 को ई ऑफिस (ई फाइल) प्रणाली और पवर बीआई डैशबोर्ड का लॉच किया।

एचएलएल ने 14 फरवरी 2025 को 'आरोग्य मैत्री' परियोजना के अधीन 50 भीष्म क्यूब्स के प्रापण के लिए स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (एमओएचएफडब्लयू) के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओए) पर हस्ताक्षर किया।

गणतंत्र दिवस समारोह

निगमित मुख्यालय

पेरूरकडा फैक्टरी

आक्कुलम फैक्टरी

कनगला फैक्टरी

काक्कनाड फैक्टरी

केंद्रीय विपणन कार्यालय

एचएलएल 2025 : एक दृष्टिकोण

अखिल भारतीय राजभाषा सेमिनार में पुरस्कृत (प्रथम स्थान)

दीप्ति विजयन
उप प्रबंधक (मानव संसाधन)
एचएलएल काक्कनाड फैक्टरी

एचएलएल लाइफ़केयर लिमिटेड

- एचएलएल ने पिछले पाँच दशकों में एक लंबा सफर तय किया है ।
- एक मामूली कंडोम विनिर्माता से, एचएलएल भारत के प्रमुख गुणवत्तापूर्ण और किफायती स्वास्थ्य उत्पादों और सेवाओं के प्रदाताओं में से एक बनकर उभरा है ।
- नवाचार गर्भनिरोधकों से लेकर अस्पताल उत्पादों तक, नैदानिक सेवाओं से लेकर रीटेल फार्मेसी तक, नए जमाने का अवसंरचना बनाने से लेकर सामाजिक विकास की पहलों तक, हम पीढ़ियों को स्वस्थ रखने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं ।
- जब हम 2025 की ओर देखते हैं, तो एचएलएल एक ऐसे भविष्य की कल्पना करता है जहाँ यह स्वास्थ्य सेवा और एफएमसीजी क्षेत्र में एक वैश्विक नेता हो, जो तकनीक, डिजिटल नवाचार और उपभोक्ता की ज़रूरतों पर ध्यान केंद्रित करके सभी हितधारकों के लिए स्थायी मूल्य बनाता है। यह सार्वजनिक स्वास्थ्य, रोग निवारक और जीवन रक्षा उत्पादों के उत्पादन और वितरण में उत्कृष्टता प्राप्त करेगा ।
- 2025 में, एचएलएल, भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में एक अग्रणी और नवप्रतिष्ठित संस्था बनने की राह पर होगा।

यह दृष्टिकोण निम्नलिखित लक्ष्यों पर आधारित है :

- स्वास्थ्य सेवा में पहुँच बढ़ाना।
- रोग निवारण पर ध्यान केंद्रित करना।
- जीवन रक्षा उत्पादों में नेतृत्व।
- अनुसंधान और विकास में निवेश।
- स्थायी और सामाजिक रूप से जिम्मेदार।

स्वास्थ्य सेवा में पहुँच बढ़ाना

- ग्रामीण और दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच बढ़ाने के लिए रणनीतिक भागीदारी स्थापित करना।
- किफायती स्वास्थ्य सेवा उत्पादों और दवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला विकसित करना।
- टेलिमेडिसिन और मोबाइल स्वास्थ्य जैसी नवीन तकनीकों का उपयोग करके स्वास्थ्य सेवा प्रदान करना।

रोग निवारण पर ध्यान केंद्रित करना

- जागरूकता अभियान और रोग निवारण कार्यक्रमों के माध्यम से रोगों को रोकने पर ध्यान केंद्रित करना।
- टीकों और निदान किटों सहित रोग निवारण उत्पादों का विकास और विपणन करना।
- स्वास्थ्य जीवनशैली को बढ़ावा देने और गैर-संचारणीय रोगों (NCDs) को कम करने के लिए पहल करना।

जीवन रक्षा उत्पादों में नेतृत्व

- आपातकालीन चिकित्सा और आपदा राहत के लिए उच्च गुणवत्ता वाले जीवन रक्षा उत्पादों का विनिर्माण करना।
- रक्षा बलों और अर्धसैनिक बलों के लिए विशेष जीवन रक्षा समाधान विकसित करना।
- अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों में एचएलएल के जीवन रक्षा उत्पादों की उपस्थिति को मजबूत करना।

अनुसंधान और विकास में निवेश

- स्वास्थ्य सेवा उत्पादों और प्रौद्योगिकियों के विकास के लिए अनुसंधान और विकास (R&D) में निवेश बढ़ाना।
- नई दवाओं और चिकित्सा उपकरणों के विकास के लिए अकादमिक संस्थानों और फार्मास्यूटिकल कंपनियों के साथ सहयोग करना।
- स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने के लिए एक मजबूत R&D संस्कृति विकसित करना।

स्थायी और सामाजिक रूप से जिम्मेदार

- पर्यावरण पर एचएलएल के संचालन के प्रभाव को कम करने के लिए पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ प्रथाओं को अपनाना।
- सामाजिक रूप से जिम्मेदार पहलों पर फोकस करना, जैसे कि स्वास्थ्य सेवा शिविर आयोजित करना और समुदायों में जागरूकता पैदा करना।
- एक नैतिक और पारदर्शी तरीके से व्यवसाय करना जो सभी हितधारकों के लिए मूल्यवान होगा।

मुख्य रणनीति - 2025

मेरी राय में 2025 में इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की मुख्य रणनीतियाँ ये हैं

- तकनीकी नेतृत्व
- डिजिटल परिवर्तन
- एफएमसीजी पावरहाउस
- स्वास्थ्य सेवा पहुंच
- वैश्विक विस्तार
- कर्मचारी सशक्तिकरण

तकनीकी नेतृत्व

- उन्नत चिकित्सा उपकरण, डिजिटल स्वास्थ्य प्लेटफॉर्म और स्थायी उत्पाद फॉर्मुलेशन विकसित करने के लिए अनुसंधान और विकास में निवेश करें।
- उत्पाद विकास और डिलीवरी को बढ़ाने के लिए ए आई, आईओटी और ब्लॉकचेन जैसी उभरती हुई तकनीकों को अपनाएं।

डिजिटल परिवर्तन

- ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म, मोबाइल ऐप और सोशल मीडिया चैनलों वाले एक मजबूत डिजिटल इकोसिस्टम का निर्माण करें।
- उपभोक्ता व्यवहार को समझने और विपणन उद्यमों को वैयक्तिकृत करने के लिए डेटा विश्लेषण का उपयोग करें।
- व्यापक दर्शकों तक पहुंचने और ब्रांड लॉयल्टी बनाने के लिए डिजिटल मार्केटिंग रणनीतियों को लागू करें।

एफएमसीजी पावरहाउस

- विभिन्न उपभोक्ता खंडों को पूरा करने वाले एफएमसीजी उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल करने के लिए उत्पाद पोर्टफोलियो का विस्तार करें।
- शहरी और ग्रामीण दोनों बाज़ारों तक प्रभावी ढंग से पहुँचने के लिए वितरण नेटवर्क को मज़बूत करें।
- गुणवत्ता, मूल्य और उपभोक्ता विश्वास पर ध्यान केंद्रित करके मज़बूत ब्रांड बनाएं।

स्वास्थ्य सेवा पहुँच

- विशेष रूप से ग्रामीण और कम सेवा वाले क्षेत्रों में गुणवत्ता एवं किफायती स्वास्थ्य सेवा उत्पाद और सेवाएं प्रदान करना जारी रखें।
- स्वास्थ्य सेवा अंतराल को पाटने के लिए टेलीमेडिसिन और मोबाइल स्वास्थ्य समाधानों का लाभ उठाएं।
- बेहतर स्वास्थ्य परिणामों के लिए सरकार और गैर-सरकारी संगठनों के साथ साझेदारी करें।

आपूर्ति श्रृंखला अनुकूलन

- दक्षता में सुधार और लागत कम करने के लिए उन्नत आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन प्रणालियों को लागू करें।
- आपूर्तिकर्ताओं और वितरकों के साथ मज़बूत संबंध बनाएं।
- कच्चे माल और तैयार उत्पादों की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करें।

वैश्विक विस्तार

- उच्च-वृद्धि वाले बाज़ारों की पहचान करें और लक्षित बाज़ार प्रवेश रणनीतियाँ विकसित करें।
- स्थानीय प्राथमिकताओं और नियमों के अनुकूल उत्पाद पेशकश।
- स्थानीय वितरकों और खुदरा विक्रेताओं के साथ मजबूत साझेदारी बनाएं।

कर्मचारी सशक्तिकरण

- हमारे कर्मचारी हमारी सबसे मूल्यवान संपत्ति है, यह मानते हुए
- हम उनकी पूरी क्षमता का लाभ उठाने के लिए कर्मचारी प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों में निवेश करें।
- कर्मचारियों के व्यावसायिक और व्यक्तिगत विकास के लिए कल्याणकारी गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया जाए।
- इसके अतिरिक्त, हम नवाचार और सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा दें, जहाँ कर्मचारी अपने विचारों को साझा करने और कंपनी की सफलता में योगदान देने के लिए सशक्त महसूस करते हैं।
- अंत में, हम कार्यबल में विविधता और समावेश को बढ़ावा दें, एक ऐसा वातावरण बनाएं जहाँ हर कोई मूल्यवान और सम्मानित महसूस करें।

निष्कर्ष

- एचएलएल एक उज्ज्वल भविष्य के लिए तैयार है ।
- नवाचार, स्थिरता और कर्मचारी सशक्तिकरण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता हमारी सफलता को आगे बढ़ाएगी।
- साथ मिलकर, हम एचएलएल और हमारे द्वारा सेवा की जाने वाली समुदायों के लिए एक बेहतर भविष्य का निर्माण करेंगे।

लेख प्रतियोगिता में पुरस्कृत

बच्चों पर मोबाइल फ़ोन का प्रभाव

आशा.वी.एस
एमजी- 6
एचएलएल आक्कुलम फैक्टरी

विकास और प्रौद्योगिकी के इस बदलते दौर में मोबाइल मानव जीवन का एक अहम हिस्सा बन गया है। एक पल के लिए भी कोई इसे खुद से दूर नहीं करना चाहता है। इसी का नतीजा है कि माता-पिता की देखा-देखी आज छोटे-छोटे बच्चे भी इसके आदी हो गए हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि लाड-प्यार के कारण आपने जिस उपकरण को अपने बच्चे की जिंदगी में दाखिल किया है, आगे चलकर वह आपके बच्चे की शारीरिक और मानसिक समस्याओं का कारण बन सकता है। विकसित तकनीकी के बाद मोबाइल फोन का उपयोग आजकल हर कोई करता है, पहले इसका उपयोग केवल बुजुर्ग लोग करते थे किंतु अभी छोटे बच्चे भी मोबाइल का उपयोग करने लगे हैं, जहाँ मोबाइल के कई फायदे हैं वहीं इसके बहुत से नुकसान है, छोटे बच्चों को मोबाइल फोन देने से वे उसमें घंटों तक वीडियोगेम खेलते रहते हैं इससे उनका ध्यान वीडियोगेम में अधिक और पढाई में कम हो जाता है।

मोबाइल की उपयोगिता जैसे-जैसे बढ़ी है वैसे-वैसे अनेक प्रकार की मोबाइल गेम आने लगे हैं, पहले के समय में मोबाइल फोन पर केवल कुछ गेम्स आते थे किंतु स्मार्ट फोन के आते ही तरह-तरह के एप्लीकेशन और गेम आने लगे हैं जिन पर छोटे बच्चे अपना ज़्यादातर वक्त बिताते हैं। गेम की वजह से बच्चों का ध्यान खाने पीने में भी नहीं रहता, खेलते - खेलते घंटो कैसे बीत जाते हैं पता ही नहीं चलता, इससे उनका पढाई का भी नुकसान होता है, बच्चे वक्त पर अपना होमवर्क पूरा नहीं कर पाते, रोज़ इन्हीं आदतों की वजह से उनका परीक्षा परिणाम बेहतर नहीं हो पाता है, पहले के समय में जहाँ इतनी डिजिटल सुविधाएँ नहीं थीं तब बच्चे खूब मन लगाकर पढ़ाई करते थे, उनका ध्यान यहाँ वहाँ नहीं भटकता था, अपना गृह कार्य भी समय पर पूरा करते थे लेकिन जैसे-जैसे टेक्नोलॉजी बढ़ती गई बच्चों के लिए तरह-तरह के उपकरण आने लगे।

स्मार्ट फोन पर ही आजकल पढ़ाई से संबंधित सभी जानकारियाँ मिल जाती हैं छोटे बच्चे जो दूसरी, तीसरी, पांचवीं, १२ वीं से लेकर कॉलेज तक पढ़ते हैं वे मोबाइल का उपयोग करते हैं और ऑनलाइन तरीके से प्रश्नों का उत्तर खोजते हैं, मोबाइल की उपयोगिता को देखते हुए अब तो ऑनलाइन क्लास भी होने लगे हैं, ऑनलाइन तरीके से अध्यापक बच्चों को अध्ययन कराते हैं। ऑनलाइन शिक्षण के बाद से अभिभावकों ने सभी बच्चों को मोबाइल चलाने की इजाजत दे दी है, यदि इसका उपयोग सही से किया जाए, अपनी पढ़ाई के लिए किया जाए, इंटरनेट के माध्यम से अपने प्रश्नों का जवाब प्राप्त करने के लिए किया जाए तो इससे कोई नुकसान नहीं है बल्कि इससे बच्चों का फायदा ही होगा उन्हें प्रतिदिन नई-नई चीज़ें जानने को मिलेगी किंतु अधिकतर बच्चे मोबाइल का सदुपयोग नहीं करते। ज़्यादातर बच्चों को स्मार्टफोन पर गेम्स और ऑनलाइन वीडियोस देखने में अधिक दिलचस्पी होती है, जो अपनी पढ़ाई के प्रति गंभीरता रखते हैं केवल वही गूगल पर अपनी काम की चीज़ें खोजते हैं। जब से स्मार्ट फोन की मांग बाज़ारों में बढ़ी है तब से छोटे बच्चे उसी में अपना मनपसंद गेम्स डाउनलॉड करके खेलने लगे हैं, लंबे समय तक एक जगह बैठ कर मोबाइल पर गेम खेलना नुकसानदायक हो सकता है, इससे उनकी शारीरिक क्रियाकलाप नहीं होती है, शारीरिक गतिविधियाँ रुक

जाने से बच्चों में मोटापे की समस्या हो रही है, अधिक वजन बढने से कई तरह की बीमारी हो सकती हैं।

द्यस्वास्थ्य जीवन के लिए बच्चों को मोबाइल पर कम वक्त बिताना चाहिए और बाहर मैदान में जाकर अपना पसंदीदा खेल खेलना चाहिए इससे उनकी शारीरिक गतिविधियाँ बनी रहेगी और सूर्य के प्रकाश से उनको विटामिन डी मिलेगी जो कि स्वस्थ जीवन शैली के लिए जरूरी होती है।

बच्चों पर मोबाइल फोन के हानिकारक प्रभाव आजकल देखने को मिलते हैं, जो बच्चे बहुत समय तक मोबाइल स्क्रीन पर गेम्स खेलते हैं उनकी आंखों की रोशनी कम हो सकती है, बच्चों में नेत्र रोग की समस्या उत्पन्न हो सकती है, पहले जहां टेलीविज़न के सामने बच्चे घंटों तक अपना पसंदीदा धारावाहिक देखते थे अब ये सब अपने स्मार्टफोन पर देखा करते हैं। जब मोबाइल का उपयोग किया जाता है तब उसका स्क्रीन हमारे नेत्रों के समीप होती है और आँखों में तीव्र रोशनी और ब्लूलाइट पड़ने की वजह से नेत्रों पर बुरा प्रभाव पड़ता है, इससे नेत्र संबंधी कई रोग उत्पन्न हो सकते हैं।

मोबाइल फोन का उपयोग करना कोई गलत बात नहीं है, यह गलत तब हो जाता है जब इसका सर्वाधिक उपयोग किया जाए, मोबाइल में आवश्यक सभी सहूलियत मिल जाती है, मनोरंजन के साधन पहले जहाँ टेलीविज़न में होते थे वह अब स्मार्टफोन में भी होते हैं, गेम्स खेलना हो, इंटरनेट पर जोक्स पढ़ना हो, पसंदीदा टी वी सीरियल, फिल्म देखना हो या अन्य मनोरंजन के साधन, ये सब मोबाइल में ही उपलब्ध हो गए हैं जिसकी वजह से फोन की लत लग चुकी है।

बहुत से लोगों को अपने मोबाइल फोन की चिंता सताती है यदि फोन उनसे दूर हो जाए या कुछ देर के लिए खो जाए तो वे तनाव में पड जाते हैं उन्हें डर लगता है, क्योंकि उनको मोबाइल फोन की लत लग चुकी है। मोबाइल फोन की वजह से बहुत से लोग अपने खाने पीने पर भी ध्यान नहीं देते, फोन में ऑनलाइन फूड आर्डर करने की सुविधा, ऑनलाइन खरीदी करने की सुविधा भी मिलती है, यदि इतनी सारी सुविधाएँ मोबाइल फोन में ही मिल जाए तो मोबाइल से लगाव किसे नहीं होगा।

मोबाइल की लत केवल बच्चों तक ही सीमित नहीं है बल्कि बड़े भी मोबाइल का सर्वाधिक उपयोग करने लगे हैं, घर में बच्चे से लेकर बड़े तक किसी के पास आपस में बातें करने का वक्त नहीं है, हर कोई अपने दोस्तों के साथ फोन पर बात करने लगा है। वास्तव में, मोबाइल फोन इंसान को अपनों से दूर कर रखा है, पहले जहाँ दफ्तर से काम करके लोग घर लौटते थे अपने परिवार के साथ बैठकर भोजन करते थे दिन भर की बातें किया करते थे वह सब आज लगभग समाप्त हो गया है। बहुत से परिवार आज ऐसे हैं जो रहते तो एक ही घर में है किंतु परिवार के सदस्यों के बीच कभी इत्मीनान से बातें नहीं होती, लोग परिवार के सदस्य से बात नहीं करते किंतु हज़ारों किलोमीटर दूर स्थित अपने मित्रों से घंटों तक बातें करते हैं।

मोबाइल फोन का आविष्कार मानव की सुविधाओं के लिए किया गया है पहले जहाँ लोगों को अपनी सूचनाएँ पहूँचाने के लिए कई दिनों का इंतज़ार करना पड़ता था, उसे आसान बनाते हुए मोबाइल ने सूचनाओं को सेकेंड्स में लोगों तक पहूँचा दिया है। किसी भी चीज़ के प्रति अत्यधिक लगाव नुकसानदेह साबित होता है, मोबाइल का उपयोग लोगों को हमेशा उचित मकसद से किया जाना चाहिए, फोन एडिक्शन उतना ही हानिकारक है जितना ही एल्कोहल, लत किसी भी चीज़ की हो नुकसानदायक होता है, इसलिए फोन का उपयोग तभी करना चाहिए जब उसकी ज़रूरत हो।

विशेषज्ञों के मुताबिक 6 माह के नवजात शिशु तरह-तरह के चित्र और रंगों को देखकर आकर्षित होते हैं। यह कारण है कि मोबाइल के प्रति बच्चों का रुझान बढ़ जाता है। मोबाइल से निकलने वाली रोशनी और उस पर नज़र आने वाले चित्र बच्चों को अपनी ओर खींचते हैं। साथ ही मोबाइल की आवाज़ भी बच्चों में उसके बारे में जानने और उसे छूने की उत्सुकता पैदा करती है।

बच्चों में मोबाइल फोन के उपयोग के कई दुष्प्रभाव देखे जा सकते हैं, जैसे -

1. **तंत्रिका विकार :** मोबाइल फोन से निकलने वाले रेडिएशन बच्चों के लिए हानिकारक माना गया है। इससे बच्चों में कई समस्याएँ होने का खतरा रहता है, जिसमें तंत्रिका संबंधी सम्स्याएँ भी शामिल हैं। तंत्रिका विकार में कई गंभीर समस्याएँ शामिल हैं, लेकिन साधारण तौर पर उसके कारण चलने, बोलने, सांस लेने, निगलने और सीखने की क्षमता में कमी देखी जा सकती है।

2. **शारीरिक व्यसन :** शारीरिक व्यसन की समस्या को हम किसी भी भौतिक वस्तु के प्रति रुझान कह सकते हैं। दरअसल, कम उम्र से ही जिन बच्चों के हाथ में मोबाइल फोन आ जाता है, उन्हें इसकी लत लग जाती है। इस कारण वे हर समय मोबाइल में ही लगे रहते हैं, उन्हें खाने-पीने और सोने तक का होश नहीं रहता।

3. **मानसिक विकास में कमी :** मोबाइल फोन का एक दुष्प्रभाव यह भी है कि इससे बच्चे का मानसिक विकास बाधित हो सकता है। कारण यह है कि मोबाइल की लत के कारण बच्चा और किसी भी काम में ध्यान नहीं देता। सामाजिक और व्यवहारिक रूप से भी वह लोगों से नहीं जुड़

पाता। इससे बच्चों में उम्र के हिसाब से जो विकास होना चाहिए, उसमें कहीं न कहीं कमी आ जाती है।

4. **अनिद्रा की समस्याः** बच्चे मोबाइल में गेम खेलते हैं, नई-नई चीज़ें देखते हैं। आजकल तो कार्टून और अन्य कार्यक्रम भी उन्हें मोबाइल पर ही मिलते हैं। इनमें अधिक रुचि होने के कारण वे देर रात तक जागते रहते हैं। इस कारण स्कूल के समय में अक्सर सोने की शिकायत भी माँ बाप को मिल सकती हैं। इस आदत की निरंतरता से अनिद्रा की समस्या जन्म लेती है।

5.**व्यवहार में बदलाव :** बच्चे के द्वारा मोबाइल फोन का लगातार उपयोग उसके व्यवहार में बदलाव का भी कारण बन सकता है। विशेषज्ञों के मुताबिक ऐसा माना गया है कि मोबाइल की लत बच्चे में किसी अन्य काम में उसका ध्यान केंद्रित नहीं होने देती। ऐसे में अगर आप उससे एकदम से मोबाइल दूर करेंगे, तो हो सकता है कि उसके मन में आपके प्रति नकारात्मक भाव पैदा हो, वह चिड़चिड़ा हो सकता है या फिर मोबाइल को पाने के लिए नाराज़गी (रोकर या खाना छोड़कर) भी जाहिर करें।

6. **कैंसर का खतरा :** बच्चों पर मोबाइल से पड़ने वाले दुष्प्रभावों से संबंधित एक शोध में इस बात का जिक्र मिलता है कि मोबाइल से निकलने वाला रेडियेशन कैंसर एवं ब्रेनट्यूमर का कारण बन सकता है।

7. **सिर दर्द :** कई मामलों में ऐसा देखा गया है कि मोबाइल का अधिक समय तक उपयोग करने वाले बच्चों में सिरदर्द की समस्या हो जाती है।

8. **अवसाद और चिडचिडापन :** बच्चों में मोबाइल के अधिक उपयोग से अवसाद और जल्द गुस्सा आने की समस्या भी हो सकती है।

हालांकि, मोबाइल आपके जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है, लेकिन इससे बच्चों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को भी नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। लेकिन बच्चों को मोबाइल की लत न लगे और भविष्य में आने वाली बडी जोखिमों से बचा सकें, इस पर हमें ज़रूर ध्यान देना ही चाहिए।

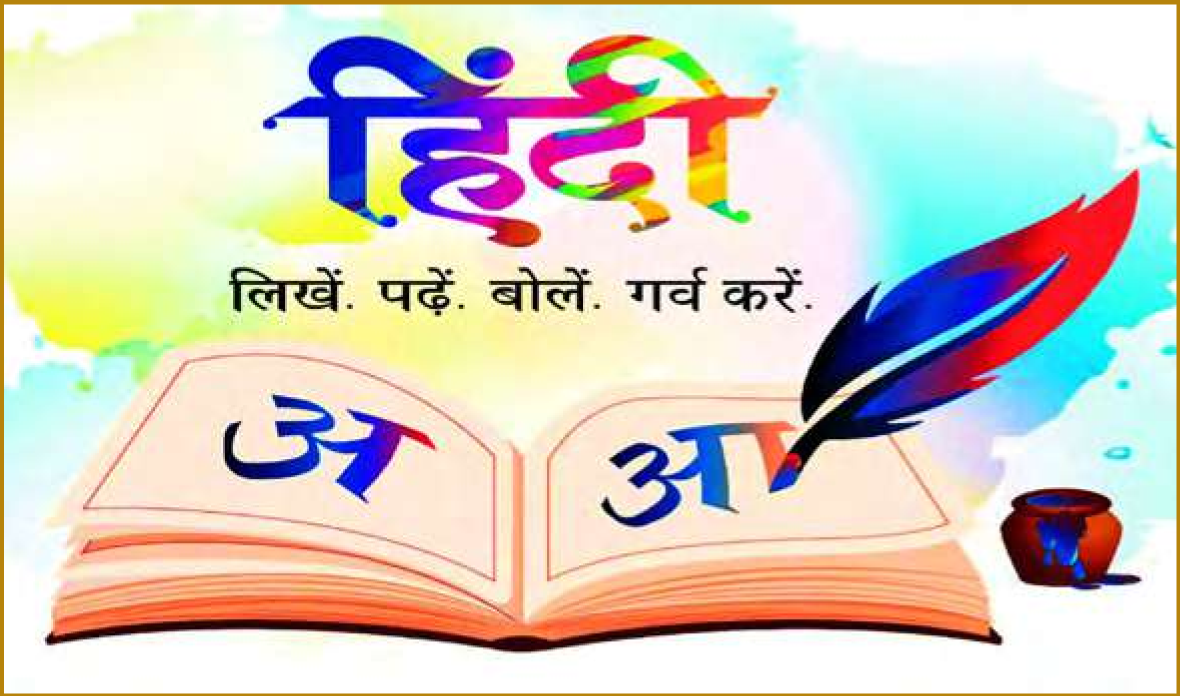

सामाजिक मीडिया

सिमी वी एस
एम जी 6
एचएलएल आक्कुलम फैक्टरी

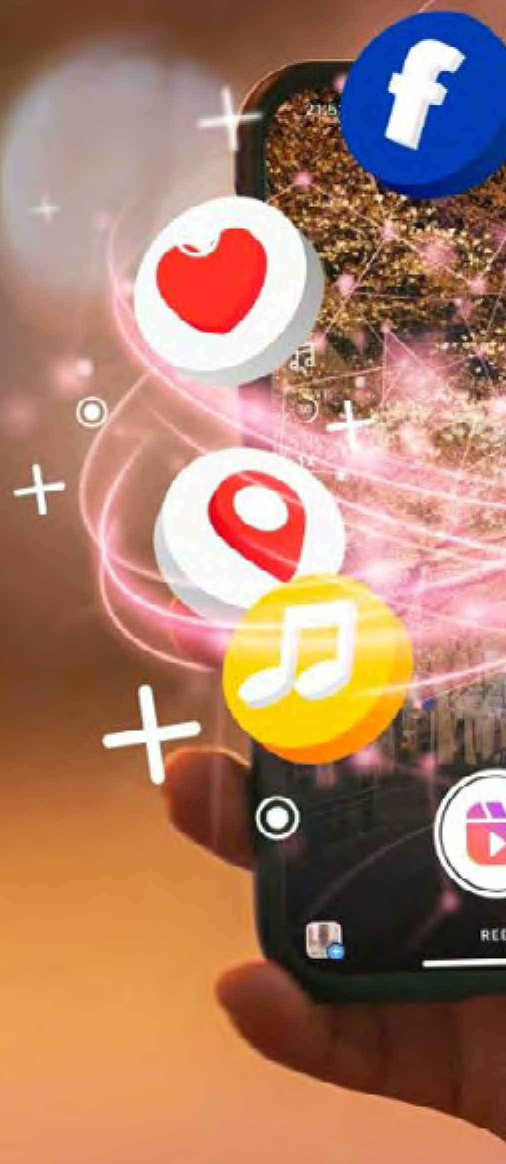

सामाजिक मीडिया मूल रूप से कंप्यूटर या किसी भी मानव संचार या जानकारी के आदान-प्रदान करने से जुड़ा हुआ है। जो कंप्यूटर, टैबलेट या मोबाइल के माध्यम से प्राप्त की जाती है। ऐसी कई और वेबसाइटें और ऐप्स भी हैं जो इसे संभव बनाते हैं। सामाजिक मीडिया अब संचार का सबसे बड़ा माध्यम बन रहा है और तेज़ी से लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। सामाजिक मीड़िया आपको विचारों, सामग्री, सूचना और समाचार इत्यादि को बहुत तेज़ी से एक दूसरे से साझा करने में सक्षम बनाता है। पिछले कुछ वर्षों में सामाजिक मीड़िया के उपयोग में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि हुई है तथा इसने दुनिया भर के लाखों उपयोगकर्ताओं को एक साथ जोड़ लिया है।

सामाजिक मीड़िया एक ऐसा माध्यम है, जो समाज में या किसी के जीवन और नेटवर्क के बारे में होने वाली सभी सूचनाओं को साझा करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करता है। सामाजिक मीडिया प्रौद्योगिकियाँ, पत्रिकाएं, इंटरनेट फोरम, वेबलॉग, सोशल ब्लोग, माइक्रोब्लॉगिंग, विकी, पॉडकास्ट, फोटो या चित्र, वीडियो, सामाजिक रैंकिंग और बुकमार्क सहित विभिन्न रूप लेती हैं। समाज में सामाजिक मीडिया का दैनिक जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक मीडिया आज हमारे जीवन में एक बड़ी भूमिका निभा रहा है। एक बटन दबाने पर ही हमारे पास विस्तृत जानकारी पहुँच जा रही है। सामाजिक मीडिया बहुत ही सशक्त माध्यम है और इसका प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ता है। आज सामाजिक मीडिया के बिना जीवन की कल्पना करना मुश्किल है। सामाजिक मीडिया का नकारात्मक प्रभाव युवाओं के बीच में सबसे अधिक देखने को मिलता है। युवा अब शारीरिक खेलों और मनोरंजन के बजाय वीडियो गेम, यूट्यूब आदि का प्रयोग अधिक करते हैं, जिससे युवा वर्ग शारीरिक और मानसिक तौर पर कमज़ोर हो रहे हैं।

सामाजिक मीडिया के द्वारा हम जितनी सहजता से सकारात्मक सूचना प्राप्त कर सकते हैं उतनी ही सहजता से नकारात्मक सूचना भी हमें प्राप्त हो जाती है। सामाजिक मीडिया का सबसे ज़्यादा उपयोग सर्च इंजन, ऑडियो, वीडियो, सूचना, फोटो आदि के लिए गूगल, फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्वीटर आदि के माध्यम से किया जाता है। आज सामाजिक मीडिया के माध्यम से ही मार्केटिंग, प्रचार और क्रय विक्रय हो रहा है ।

सामाजिक मीड़िया का उपयोग करने से पहले ध्यान से उसके सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं की जाँच कर लेनी चाहिए। यदि सामाजिक मीडिया का सही तरीके से उपयोग किया जाए तो ये मानव जाति के लिए वरदान साबित हो सकते हैं। आज हमें डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता है ताकि हम सही तरह से सामाजिक मीडिया का इस्तेमाल कर सके। हम इस सच्चाई को अनदेखा नहीं कर सकते हैं कि सामाजिक मीडिया आज हमारे जीवन में मौजूद सबसे बड़े तत्वों में से एक है। इसके माध्यम से हम किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं तथा दुनिया के किसी भी कोने में रहने वाले अपने प्रियजनों से बात कर सकते हैं। सामाजिक मीडिया एक आकर्षक तत्व है और आज यह हमारे जीवन से जुड़ा हुआ है। युवा हमारे देश का भविष्य है, वे देश की अर्थव्यवस्था को बना या बिगाड़ सकते हैं, वहीं सामाजिक नेटवर्किंग साइटों पर उनका सबसे अधिक सक्रिय रहना, उनके ऊपर अत्यधिक प्रभाव डाल रहा है ।

इन दिनों सामाजिक नेटवर्किंग साइटों से जुड़े रहना सबको पसंद है। कुछ लोगों का मानना है कि यदि आप डिजिटल रूप से उपस्थित नहीं है, तो आपका कोई अस्तित्व नहीं है। सामाजिक नेटवर्किंग साइटों पर उपस्थितों का बढ़ता दबाव और प्रभावशाली प्रोफाइल, युवाओं को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर रही है। आंकड़ों के मुताबिक एक सामान्य किशोर प्रति सप्ताह औसत रूप से 72 घंटे सामाजिक मीड़िया का उपयोग किया जाता है,जिनके कारण उनके अंदर गंभीर समस्याएं पैदा होने लगती हैं जैसे अध्ययन, शारीरिक और अन्य फायदेमंद गतिविधियों में ध्यान कम होने से चिंता और अन्य जटिल मुद्दों को उजागर करती है। अब हमारे पास वास्तविक मित्र की तुलना में अप्रत्यक्ष मित्र सबसे अधिक होते जा रहे हैं और हम दिन प्रतिदिन एक-दूसरे से संबंध होते जा रहे हैं। इसके साथ ही अजनबियों, यौन अपराधियों को अपनी निजी जानकारी आदि देना खतरे की बात है।

सामाजिक मीडिया का महत्व अनेक प्रकार से होते हैं, जैसे - व्याख्यानों का सीधा प्रसारण, सहयोग का बढ़ता आदान-प्रदान, शिक्षा कार्यो में आसानी, अधिक अनुशासन, शिक्षा में मददगार, शिक्षण ब्लोग और लेखन। सामाजिक मीडिया ने समाज पर गहरा प्रभाव डाला है, जिससे हमारे संचार करने, जानकारी साझा करने और मीडिया का उपयोग करने के तरीके में बदलाव आया है। हालांकि इसने कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं, जैसे कि कनेक्टिविटी में वृद्धि और सूचना का लोकतांत्रीकरण, इसके नकारात्मक प्रभाव भी हुए हैं, जैसे गलत सूचना एवं घृणात्पद भाषण का प्रसार। जैसे-जैसे सामाजिक मीडिया का विकास जारी है, समाज पर इसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को पहचानना और इसके नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए कदम उठाना आवश्यक है।

शक्ति-रूपेण संस्थिता : भारतीय नारी की शौर्य गाथा

डॉ.संतोष कुमार शुक्ल
वरिष्ठ वैज्ञानिक
निगमित अनुसंधान केंद्र

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।। मनुस्मृति 3/56

मनुस्मृति के अनुसार, जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं, और जहाँ स्त्रियों की पूजा नहीं होती है, उनका सम्मान नहीं होता है वहाँ किये गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं।

इस भूमंडल में भारतवर्ष ही ऐसा देश है, जहाँ इस विषय पर गहराई से विचार किया जाता है। पौराणिक काल से ही नारी को पूजा योग्य, माता जैसा सम्मान देने की बात कही गई है। यद्यपि अधुनातन दिखने की होड़ में कुछ ह्रास भी हुआ है, फिर भी अन्य देशों से अच्छी स्थिति है। भारतवर्ष में महिलाओं के शौर्य का इतिहास बहुत ही गौरवशाली रहा है। ऐसे अनेक संस्मरण मिलते हैं, जिनमें भारतीय नारी के संयम, शौर्य पराक्रम का उल्लेख मिलता है। भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम का स्मरण करें, तो पता चलता है कि उसमें महिलाओं की भूमिका अभूतपूर्व थी। क्या कोई रानी झांसी को भूल सकता है? सुभद्रा कुमार चौहान की कविता 'भूख लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी' में उनके शौर्य का वर्णन सुनकर प्रत्येक देशवासी को गौरव की अनुभूति होती है। आज़ादी की लड़ाई में अनेक महिलाओं ने बढ़-चढ़कर अपने शौर्य का परिचय दिया है यद्यपि ये वीरांगनाएं किसी राज परिवार से ताल्लुक नहीं रखती थीं, बल्कि ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनमें सामान्य परिवार की साधारण महिलाएं भी असाधारण शौर्य का परिचय देते हुए अमर हो गई हैं। आज़ादी का अमृत महोत्सव एक ऐसा अनूठा अवसर है, जब हम भारतवर्ष की ज्ञात और अज्ञात, इतिहास के पन्नों में खोई हुई ऐसी वीरांगना महिलाओं का स्मरण कर रहे हैं, जिनका अपने समय में सामाजिक, सांस्कृतिक के साथ भारतवर्ष के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान रहा है। अभी भी ऐसी अनेक महिलाएं हैं, जिनके योगदान को अब तक हमने खोज नहीं पाए हैं। पौराणिक काल खंड में चाहे महाभारत का काल हो या फिर मध्य या आधुनिक काल, प्रत्येक कालखंड में महिलाओं का बढ़ा योगदान रहा है।

1.रानी लक्ष्मीबाई : भारतीय स्तंत्रता संग्राम को यदि स्मरण किया जाए और झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को याद न किया जाए तो यह उचित नहीं होगा। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई जिनके बचपन का नाम मनु था, बचपन से ही अपने रण कौशल से अपने नाना को बहुत प्रभावित किया था। प्रसिद्ध कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी रचना में लिखा है कि खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी। उनका अदम्य साहस और रणकौशल पुरुषों से बढ़-चढ़ कर था। उन्होंने दुश्मनों को नाको चने चबवा दिए थे।

2.कमला नेहरू :
कमला नेहरू को इतिहास की पुस्तकों में यथोचित स्थान नहीं मिल पाया है। इसके पीछे क्या कारण थे, वह शोध का विषय है। कमला नेहरू एक साधारण परिवार से थी और उनका विवाह पंडित जवाहर लाल नेहरू से हुआ, जो उस समय एक कुलीन परिवार था। परिणाम स्वरूप पंडित नेहरू की बहनों की नज़र में कमला बहुत उपेक्षित थी, इस बर्ताव से कमला नेहरू को कष्ट भी था और वह अवसाद में चली गई । लेकिन आज़ादी का आंदोलन एक ऐसा अवसर था, जिसमें उन्होंने खुद को एक स्वाधीनता सेनानी के रूप में रूपांतरित कर दिया। प्रयागराज में उनके योगदान को याद करके लोग श्रद्धा भाव रखते हैं।

3. सुचेता कृपलानी :
सुचेता कृपलानी एक अद्भुत महिला थी। सुचेता और जे बी कृपलानी की शादी का

प्रसंग बहुत ही रोमांचक है। उनकी शादी से गांधी जी असहमत थे, क्योंकि उन्हें आशंका थी कि विवाह के बाद स्वतंत्रता संघर्ष में जे बी कृपलान-ी अपनी प्रतिभा का पूरा सदुपयोग नहीं कर पाएंगे। उन्होंने सुचेता को जे बी कृपलानी के स्थान पर किसी और से शादी करने की सलाह दी थी। इस पर सुचेता ने गांधी जी को कठोर जवाब दिया और कहा कि आप मुझे अनैतिक होने का पाठ पढ़ा रहे हैं। सुचेता ने जे बी कृपलानी से विवाह कर स्वतंत्रता आंदोलन की लड़ाई में गांधी जी के हाथ को और मजबूती दी और उनकी आशंका को निराधार साबित किया।

4. **सुभद्रा कुमारी चौहान** : स्वतंत्रता आंदोलन के समय प्रसिद्ध कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान को एक ऐसी कवियत्री के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने नई पीढ़ियों को प्रेरणा देने का काम किया। आज भी उनकी कविताओं को पढ़कर लोग देशभक्ति के भाव में सराबोर हो जाते हैं। उनका लिखा यह काव्य सिर्फ कागज़ी नहीं था, जिस जज़्बे को उन्होंने कागज़ पर उतारा उसे जिया भी। इसका प्रमाण है कि सुभद्रा कुमारी चौहान महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाली प्रथम महिला थीं और कई बार जेल भी गयीं। 1920-21 में सुभद्रा कुमारी चौहान और लक्ष्मण सिंह अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य बने थे। दोनों ने नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया और घर-घर में कांग्रेस का संदेश पहुँचाया। त्याग और सादगी में सुभद्रा जी सफेद खादी कपड़े पहनती थीं। उनको सादा वेशभूषा में देख कर बापू ने सुभद्रा जी से पूछ ही लिया, 'बेन ! तुम्हारा ब्याह हो गया है?' सुभद्रा जी ने कहा, 'हाँ' और फिर उत्साह से बताया कि मेरे पति भी मेरे साथ आए हैं। बापू ने सुभद्रा को डाँटा,'तुम्हारे माथे पर सिन्दूर क्यों नहीं है और तुमने चूडियाँ क्यों नहीं पहनीं? जाओ, कल किनारे वाली साड़ी पहनकर आना।' सुभद्रा जी के सहज स्नेही मन और निश्छल स्वभाव का जादू सभी पर चलता था। उनका जीवन प्रेम से युक्त था और निरंतर निर्मल प्यार बाँटकर भी खाली नहीं होता था। 1922 में जबलपुर का 'झंड़ा सत्याग्रह' देश का पहला सत्याग्रह था और सुभद्रा जी की पहली महिला सत्याग्रही थीं। सभाओं में सुभद्रा जी अंग्रेज़ी पर बरसती थीं। सुभद्रा जी में बड़े सहज ढंग से गंभीरता और चंचलता का अद्‌भुत संयोग था। वे जिस सहजता से देश की पहली स्त्री सत्याग्रही बनकर जेल जा सकती थीं, उसी तरह अपने घर में, बाल-बच्चों में और गृहस्थी के छोटे-मोटे कामों में भी रमी रह सकती थीं।

5.**ललेश्वरी** : भारतवर्ष रत्नगर्भा है, ऐसी अनेक विदुषी महिलाओं का उदाहरण हमें मिलता है, जिन्होंने समाज और देश को ज्ञान की ज्योति से प्रकाशित किया है। करीब हज़ार साल पूर्व कश्मीर में एक ऐसी ही विदुषी महिला ललेश्वरी हुई, जिन्होंने पूरे भारत को ज्ञान का प्रकाश दिया। संत ललेश्वरी अपनी रचनाओं में प्रतिपादित करती हैं कि परमेश्वर निराकार है और उसे अपने अंदर खोजें। धर्म का बाह्याडंबर व्यर्थ है। धर्म के नाम पर चल रहे मिध्याचारों, विक्षेपों, भेदभावों तथा बाह्याड़ंबरों का उन्होंने जम कर विरोध किया।

6. **मीराबाई** : भक्ति मार्ग की मुख्य मीराबाई एक अद्‌भुत महिला हुई, जिन्होंने अपने ज्ञान और भक्ति के प्रकाश से समाज में चेतना जागृत कर भक्ति की धारा को प्रवाहित किया। एक बार हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि पंडित सुमित्रानंदन पंत ने एक बड़े विद्वान से पूछा कि, हमें ऐसे 12 नाम बताइए जिसमें पूरे भारत का इतिहास समा जाए। उन संत विद्वान ने जो नाम गिनाए, उन 12 नामों में एक नाम मीराबाई का भी था।

7. **सरोजनी नायडू** : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सरोजनी नायडू के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। सरोजनी नायडू ने जिस प्रकार घारासन सत्याग्रह का नेतृत्व किया, वह सरोजिनी नायडू के संकल्प शक्ति और वीरता को दर्शाता है। नमक सत्याग्रह के दौरान उन्होंने हज़ारों महिलाओं का नेतृत्व मुंबई के निकट घारासन में किया था। सत्याग्रह के दौरान महिलाओं पर जिस तरह के बर्बर जुल्म ढाए गए, उसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता, लेकिन इन सभी विपरीत परिस्थितियों में भी उनके साहस को कोई डिगा नहीं सका।

8. **सुनीति और शांति** : भारत माता को गुलामी की जंजीर से मुक्त करने में केवल युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुषों ने ही नहीं बल्कि किशोर वय बालाओं की भूमिका भी सराहनीय रही है। सुनीति और शांति नाम की दो किशोरवय बालाएं पश्चिम बंगाल के कुमिल्ला से थीं जो आज़ादी की दीवानी थीं और उन्होंने स्टीवन्स जो सैकड़ों भारतीयों के खून का उत्तरदायी था, उसे मारने की योजना बनाई और एक सुनियोजित रचना से उसका बध कर डाला। यह उनके अप्रतिम साहस की गाथा है। कम उम्र होने के कारण उन्हें फांसी की सजा नहीं दी जा सकती थी, उन्हें काला पानी की सजा सुनाई गई, लेकिन उन दोनों ने भरी अदालत में चिल्ला कर फांसी की मांग की। ऐसी साहसी बालिकाओं से सुभाष चंद्र बोस जी भी बहुत प्रभावित हुए।

9. अभयारानी अब्बक्का : भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में जब महिलाओं के शौर्य की बात आती है, तो सबसे पहला नाम सामने आता है, वह है रानी लक्ष्मी बाई का, लेकिन अगर आपके सामने अभयारानी अब्बक्का का नाम देश की वीरांगना के रूप में सामने लाया जाए, तो आप कहेंगे कि यह महिला कौन है ? 1857 की क्रांति से लेकर देश को मिली आज़ादी की पूरी कालावधि में देश के सपूतों की तरह देश के बहादुर बेटियों ने यह बताया कि वह भी किसी से कम नहीं है। कर्नाटक की अब्बक्का रानी को उनकी वीरता के लिए अभया रानी की उपाधि से नवाजा गया। अभयारानी का नाम देश को आज़ादी दिलाने वाले गुमनाम चेहरों में शामिल है। देश की आज़ादी में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं को खड़ा करने का जो अदम्य साहस अब्बक्का रानी ने दिखाया, उसकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम होगी। राजनीति और शासन व्यवस्था दोनों ही क्षेत्र में बहुत ही अच्छा ज्ञान रखती थी। पुर्तगालियों से लोहा लेने वाली रानी अब्बक्का को अगर भारत की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी कहा जाए तो इसमें कुछ गलत नहीं होगा। देश की आज़ादी का मार्ग प्रशस्त करने वाली रानी अब्बक्का का नाम, रानी लक्ष्मीबाई, रानी अवंती बाई और रानी दुर्गावती की तरह चर्चाओं में क्यों नहीं आया यह बहुत ही विचारणीय प्रश्न है। भारतीय तटरक्षक बल में 2009 में रानी अब्बक्का नामक गश्ती पोत को सम्मिलित किया गया। भारत की रानी अब्बक्का आज़ादी की लडाई में अग्निबाण का उपयोग करने वाली आखिरी शख्स थी। उनकी अच्छाइयों और वीरता के कारण ही उन्हें अभयारानी की उपाधि दी गई। लेकिन कितना शर्मनाक है यह कृत्य कि उनके योगदान को गुमनाम कर दिया गया।

10.अक्कम्मा चेरियान : त्रावणकोर की रानी झांसी के रूप में अपनी पहचान बनाने वाली अक्कम्मा चेरियान भारत के पूर्ववर्ती प्रांत त्रावणकोर (केरल) की जांबाज स्वतंत्रता सेनानी थी। जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। परंतु यह खेद का विषय है, कि उनके बारे में केरल को छोड़कर अन्य राज्यों के अधिकांश लोगों को अधिक जानकारी नहीं है। यह वह समय था जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में पूरे देश में जगह-जगह अंग्रेज़ों के खिलाफ आंदोलन हो रहे थे, अक्कम्मा चेरियान भी बापू से प्रभावित होकर अपना अच्छा खासा शिक्षण कैरियर छोड 1928 में जंगे आज़ादी में कूद पड़ी। त्रावणकोर के स्वतंत्रता आंदोलन के दस्तावेज़ों में उल्लेख मिलता है, कि तत्कालीन अंग्रेज़ीपरस्त दीवान सीपी रामस्वामी अय्यर ने सविनय अवज्ञा आंदोलन के खिलाफ 26 अगस्त 1938 को राज्य कांग्रेस पर प्रतिबंध लगाकर स्वतंत्रता सेनानियों को जेल में डाल दिया था। अक्कम्मा चेरियान ने कांग्रेस लगे प्रतिबंध को रद्द करने के लिए और दीवान सीपी रामस्वामी अय्यर को बर्खास्त करने की मांग को लेकर थंपानूर से महाराज तिरुनेल बालराम वर्मा के कवडियार महल तक खादी टोपी पहनकर और पार्टी का झंड़ा हाथ में लेकर जो ऐतिहासिक रैली निकाली, उसने ब्रिटिश हुकूमत को सक्ते में डाल दिया। इनके शौर्य की गाथा जब महात्मा गांधी तक पहुंची, तो उन्होंने हर्षित होते हुए उन्हें त्रावणकोर की रानी झांसी के नाम से विभूषित कर दिया।

11.भीकाजी कामा : मुंबई के एक पारसी परिवार में जन्मी भीकाजी कामा वह पहली भारतीय महिला थी, जिन्होंने पहली बार विदेशी धरती पर भारत का झंड़ा लहराया था। 22 अगस्त सन् 1907 को जर्मनी के स्टुटगार्ट नगर में हुई इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस में उन्होंने भारत का झंड़ा लहराया था। इस कांग्रेस में भारत के लिए एक ब्रिटिश झंड़ा निर्धारित था, पर मैडम भीकाजी कामा को मंज़ूर नहीं था। उन्होंने एक नया झंड़ा बनाया और उसे सभा में फहराते हुए राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत, जो उद्बोधन दिया था, वह आज भी भारतीयता का अनमोल दस्तावेज माना जाता है। उस झंडे को फहराते समय भीकाजी कामा ने सभा को संबोधित करते हुए कहा था कि ये दुनिया वालो, देखो यही है भारत का झंडा। यह भारत के लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। इसे सलाम करो इस झंडे को भारत के लोगों ने अपने खून से सींचा है। इसके सम्मान की रक्षा में अपनी जान की बड़ी तक लगा दी है। भारत के लिए फहराया गया वह झंडा वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज से काफी कुछ भिन्न था। भीकाजी कामा द्वारा बनाए गए उस झंडे में आज के झंडे से अलग हरे, पीले और लाल रंग की तीन पट्टियाँ थी। सबसे ऊपर हरे रंग की पट्टी पर कमल के 8 फूल बने हुए थे। यह आठ फूल उस वक्त भारत के आठ प्रांत को दर्शाते थे। बीच में पीले रंग की पट्टी थी जिसके ऊपर वंदे मातरम् लिखा गया था। सबसे नीचे नीले रंग की पट्टी थी, जिस पर सूरज और चांद बने थे। आज भी यह झंडा पुणे के केसरी मराठा पुस्तकालय में सुरक्षित रखा गया है।

12.रानी दुर्गावती : राष्ट्र के लिए अपना सब कुछ बलिदान करने वाली रानी दुर्गावती इतिहास के पन्ने में तो नहीं परंतु भारतीय जनमानस के दिलों दिमाग में विद्यमान है। रानी दुर्गावती चंदेल वंश के राजा कीर्ति सिंह की पुत्री थी और उत्तर प्रदेश के बांदा में जन्म हुआ था। रानी दुर्गावती की जीवन गाथा राष्ट्रीय चेतना और

स्वाभिमान से ओत-प्रोत है। वह स्वतंत्रता व स्वाभिमान आंदोलन की एक बीजक महानायिका है। रानी दुर्गावती दो राज्य सत्ताओं के मिलन की राष्ट्रीय शक्ति नायिका थी। रानी दुर्गावती को साहस एवं वीरता विरासत में मिली थी। रानी दुर्गावती का बलिदान राष्ट्रीय चेतना का एक ऐसा स्वर बना जो, भारतीय जनमानस को स्वाधीनता के प्रेम से प्रकाशित कर गया। रानी दुर्गावती का राष्ट्रीय स्वाभिमान ही था, कि उन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए मुगल सम्राट अकबर के प्रस्ताव को ठुकरा कर अपने प्राणों को बलिदान कर दिया। अकबर के द्वारा मांगे गए रानी के प्रिय सफेद हाथी सरमन और उनका विश्वास पात्र मंत्री आधार सिंह के प्रस्ताव को ठुकरा कर युद्ध करना स्वीकार कर लिया। आईने अकबरी में अबुल फजल ने लिखा है कि दुर्गावती के शासनकाल में गोंडवाना इतना सुव्यवस्थित था कि प्रजा लगान की अदाएगी स्वर्ण मुद्राओं और हाथियों से करती थी।

13.**नीरा आर्य** : गुलामी की बेडियों को तोड़ने के लिए आज़ादी के लाखों परवानों ने हंसकर अपने जान की बाजी लगा दी थी। इसके बावजूद कुछ कुत्सित मानसिकता के इतिहासकारों ने उनका जिक्र करना भी उचित नहीं समझा। ऐसे अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के चर्चा केवल एक क्षेत्र विशेष तक ही सीमित है या ना के बराबर है। इन्हीं में से एक है नीरा आर्य। इनमें बचपन से ही राष्ट्र के प्रति देशभक्ति कूट-कूट भरी थी। उन्होंने कई स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेकर स्वतंत्रता संघर्ष में अमूल्य योगदान दिया। नीरा आर्य ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की न केवल जान बचाई बल्कि उनके लिए खुफिया सेवा भी दी। इसके चलते ब्रिटिश सरकार ने उन पर अंदर कवर एजेंट होने का आरोप लगाया। उनके समर्पण और राष्ट्रभक्ति को देखते हुए नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने उन्हें आज़ाद हिंद फौज की पहली महिला जासूस का दायित्व सौंपा।

14.**विशनी देवी शाह** : प्रसिद्ध सेनानियों के साथ कई स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भले ही मुख्य सूची में ना हो पर उनके कार्यों को राष्ट्र नमन करता है। ऐसी ही एक अनाम सेनानी विशनी देवी शाह हुई है, जो उत्तराखंड की पुण्यभूमि से ताल्लुक रखती हैं। 1940-41 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने वाली विशनी देवी शाह ने 1942 के अंग्रेज़ों भारत छोडो आंदोलन में विशिष्ट भूमिका निभाई और अल्मोड़ा में इस आंदोलन में विशिष्ट भागीदारी की। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ, उस समय भी विशनी देवी शाह ने तिरंगा जुलूस का नेतृत्व किया।

15.**कित्तूर की रानी चेन्नम्मा** : अंग्रेज़ी से लोहा लेने वाली वीर महिलाओं में रानी लक्ष्मीबाई की तरह एक और नाम कित्तूर की रानी चेन्नम्मा का आता है। अंग्रेज़ों की गोद निषेध की नीति का विरोध करते हुए अपने राज्य की स्वाधीनता के लिए इस रानी ने पराक्रम दिखाते हुए अपना बलिदान दिया। चेन्नम्मा का जन्म कर्नाटका के बलगाम में हुआ था। वह बचपन से ही तलवारबाजी, घुड़सवारी और युद्ध कलाओं में पारंगत हो गई थी। रानी चेन्नम्मा का विवाह राजा मालासर्ज से हुआ, कुछ समय पश्चात महाराज की मृत्यु हो गई। उसके बाद रानी के पुत्र का भी देहांत हो गया। रानी चेन्नम्मा ने एक पुत्र को गोद लिया, अंग्रेज़ों ने भारतीय राजाओं को अपदस्थ कर उनकी राज्य हड़पने के लिए दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी ना मानने की नीति बनाई थी। इसके तहत अंग्रेज़ों ने रानी के पुत्र को कित्तूर राज्य का राजा बनाने से इनकार कर दिया। रानी चेन्नम्मा ने संघर्ष करने का फैसला किया। 1824 में दोनों की सेनाएं आमने-सामने थीं। लड़ाई में अंग्रेज़ों ने चेन्नम्मा का युद्ध कौशल देखा, लेकिन उन्होंने यह लड़ाई अपनी बड़ी सेना और आधुनिक हथियारों के दम पर जीत ली। चेन्नम्मा को बलिदान देना पड़ा उन्होंने आज़ादी की जो अलख दिखाई उससे लोग आज भी प्रेरणा लेते हैं।

उपसंहार :

वैसे तो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पुरषों की तुलना में महिलाओं की भी भूमिका बढ़-चढ़ कर रही है। लेकिन अनेक कुत्सित मानसिकता वाले इतिहासकारों ने इन वीरांगनाओं को अपने इतिहास की पुस्तकों में स्थान नहीं दिया और इनको यथोचित सम्मान नहीं मिला। किसी भी देश के नागरिक उस देश के इतिहास से ही यह ज्ञान ले पाते हैं, कि देश निर्माण में किन-किन का योगदान रहा है। अपने जीवन का सर्वस्व न्योछावर और होम कर देने वाले स्वतंत्रता संग्राम के इन मूर्धन्य वीरांगनाओं को यथोचित सम्मान न मिलने का हम सभी को खेद हैं। प्रस्तुत लेख में प्रमुख रूप से कुछ गुमनाम अदम्य साहस और शौर्य रखने वाली वीरांगनाओं का उल्लेख किया गया है। यदि हम दस्तावेज़ों को एकत्र करेंगे और गहराई में जाएंगे तो आज भी अनेक ऐसे गुमनाम स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में सर्वोच्च योगदान देने वाले नाम सामने आएंगे। भारतवर्ष की वर्तमान पीढ़ी को इनके बारे में बताने की और इनके उच्चतम योगदान से परिचय कराने की महती आवश्यकता है ।

एचएएलएल गीत

पिराजी वी पाटील
एस.जी - 3 तांत्रिक विभाग
एचएएलएल कनगला फैक्टरी

आओ प्यारे मिलकर आओ
एचएलएल के साथी आओ
आओ मिलकर साथ हमारे
जन सेवा हित साँझ सवेरे ।। 1।।

एचएलएल नीती का उच्च प्रयोजन
परिवार कल्याण हित नियोजन
स्वास्थ्य रक्षा का रखे हम ध्यान
स्वास्थ्य पिढ़ियों के लिए नवान्वेषण ।। 2।।

सुन्दर परिवार उच्चतम शिक्षा
जन -मन-प्रेरित-सतत-सुरक्षा
राष्ट्र की उन्नति परम ध्येय है
एचएलएल हमारी जन प्रिय संस्थान है ।। 3।।

उठो उद्यम के सच्चे सेवक
प्रबंधक और सभी कार्मिक
बुला रहे हैं लोकहित के जन
हम पर निर्भर परिवार नियोजन ।। 4।।

करें हम राष्ट्रीयता का गुणगान
रखें राजभाषा का मान सम्मान
अखंड कर्म में रहें रत हम
पार करें प्रगति के अनेक द्वार हम ।। 5।।

करें स्वास्थ्य रक्षा चीज़ों की विनिर्माण
एचएलएल करेगा पूरे विश्व में विपणन
जनता की स्वास्थ्य रक्षा हमारा योगदान
विश्व का होगा जन कल्याण ।। 6।।

नेमी टिप्पणियाँ

As Proposed	यथा प्रस्तावित
Arrangement may be made	व्यवस्था की जाए
Approved as above	उपर्युक्त के अनुसार अनुमोदित
Agenda is enclosed	कार्यसूची संलग्न हैं।
Bill may be paid	बिल का भुगतान करें।
Bring into notice	ध्यान में लाना
Case discussed	मामले पर चर्चा की गई।
Claim accepted	दावा स्वीकृत
Copy enclosed	प्रति संलग्न है।
Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें।
Entered in the register	रजिस्टर में दर्ज किया गया।
For information please	सूचनार्थ
Follow up action	अनुवर्ती कार्रवाई
Give details	विस्तृत जानकारी दें।
Guidance for	मार्गदर्शन के लिए
It is suggested	यह सुझाव दिया जाता है।
Justification for the proposal	प्रस्ताव का औचित्य
Keep pending	लंबित रखा जाए
Kindly review the case	कृपया मामले पर पुनर्विचार करें
On deputation	प्रतिनियुक्ति पर
Orders may be issued	आदेश जारी कर दिया जाए।
Please comply with	कृपया अनुपालन करें।
Reminder may be sent	अनुस्मारक भेजा जाए।
Submitted for perusal	अवलोकनार्थ प्रस्तुत
With respect	सादर

एचएलएल शब्दावली

Pharma division	फार्मा विभाग
Pharmaceutical	फार्मस्यूटिकल
Pharmacist	फार्मासिस्ट
Pills	गोलियाँ
Place of visit	यात्रा का स्थान
Plan details	योजना विवरण
Plant	संयंत्र
Policy	नीति
Political party	राजनीति पार्टी
Pollution	प्रदूषण
Portal	पोर्टल
Position	स्थिति/स्थान
Possession	कब्जा
Possible steps	संभव प्रयास/कदम
Post	पद
Post graduate	स्नातकोत्तर
Postal address	डाक पता
Posting	तैनाती
Posting order	तैनाती आदेश
Power	शक्ति
Power of attorney	मुख्तारनामा
Power& fuel	बिजली और इंधन
Pre despatch Inspection	प्रेषण पूर्व निरीक्षण
Preamble	प्रस्तावना
Precautions taken during the process	प्रक्रिया के समय का पूर्वोपाय
Predecessor	पूर्वज

Premises	परिसर
Premium	बीमा- किस्त
Prepaid expenses	पूर्व प्रदत्त खर्च
Preparation	तैयारी
Prescribed	निर्धारित
Prescribed form	निर्धारित फर्म
Prescribed Quantity	निर्धारित मात्रा
Presence	उपस्थिति
Present	विद्यमान
Present address	वर्तमान पता
Presentation	प्रस्तुतीकरण
Prevail	प्रचलित
Prevention	निवारण
Previous	पूर्व
Previous advance	पिछला अग्रिम
Previous sanction	पूर्व अनुमति/मंजूरी
Price	मूल्य
Primary	प्राथमिक
Printer	मुद्रक
Printing	मुद्रण
Prior	पहले/पूर्व
Prior period	पूर्वकालावधि
Prior permission	पूर्व अनुमति
Priority	प्राथमिकता
Private	निजी, गैर सरकारी, प्राइवेट
Private placement	निजी नियोजन
Private trade	निजी व्यापार
Privilege	विशेषाधिकार
Prize	इनाम
Probation	परिवीक्षा

Procedure	कार्यविधि
Proceedings	कार्यवाही
Process	प्रक्रिया/कार्यविधि
Procurement	प्रापण
Produce	प्रस्तुत करना
Production	उत्पादन
Production cost	उत्पादन लागत
Production expenses	उत्पादन व्यय
Profession	वृत्ति/व्यवसाय
Professionally	पेशेवार
Profile	रूपरेखा
Profit	लाभ
Profit & Loss	लाभ-हानि
Profit after tax	कर के बाद लाभ
Proforma	प्रपत्र
Programme	कार्यक्रम
Progress	प्रगति
Progress report	प्रगति रिपोर्ट
Progressive	प्रगतिशील
Prohibited	निषिद्ध
Prohibition	निषेध
Project	परियोजना
Promissory note	वचन-पत्र
Promoted	पदोन्नत
Promotion	पदोन्नति
Proof	प्रमाण
Proper	समुचित
Proper channel	उचित माध्यम
Property	संपत्ति
Proportionately	आनुपातिक रूप से

संविधान की अष्टम अनुसूची में विनिर्दिष्ट भाषाएं

1. असमिया	6. गुजराती	11. मराठी	16. मणिपुरी	21. बोडो
2. उड़िया	7. तमिल	12. मलयालम	17. नेपाली	22. डोगरी
3. उर्दु	8. तेलुगु	13. संस्कृत	18. कोंकणी	
4. कन्नड़	9. पंजाबी	14. सिन्धी	19. मैथिली	
5. कश्मीरी	10. बंगला	15. हिंदी	20. संथाली	

राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत द्विभाषी रूप में जारी किए जानेवाले दस्तावेज़

1. सामान्य आदेश	General Order
2. संकल्प	Resolution
3. नियम	Rules
4. अधिसूचना	Notification
5. प्रेस संसूचनायें/विज्ञप्तियाँ	Press Communiques/Releases
6. संविदा	Contracts
7. करार	Agreements
8. अनुज्ञप्तियाँ	Licenses
9. अनुज्ञापत्र	Permits
10. सूचना	Notice
11. निविदा प्रपत्र	Forms of Tender
12. निविदा सूचनायें	Tender Notices
13. संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखे जाने वाले शासकीय कागज़ातें	Official Papers to be laid before a House or Houses of Parliament
14. संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक और अन्य रिपोर्टें	Administrative and other reports to be laid before a House or Houses of Parliament

एक नये दृष्टिकोण की ओर
40%
छूट
एचएलएल ऑप्टिकल्स
एचएलएल का एक पहल, भारत सरकार का उद्यम
सरकारी नेत्र अस्पताल, तिरुवनंतपुरम, दूरभाष : 0471 2306966